स्टॅच्यू
मराठी भयकथा

# मूर्ति...

## मराठी रहस्यमयी डरावनी कहानी

**लेखक :-योगेश वसंत बोरसे**

भुतात्मा

**Publications**

प्रतिमा...

लेखक: योगेश वसंत बोरसे

संपादक: रोहित योगेश बोरसे
संस्करण -: मार्च 2025
**ISBN - 978-81-980407-8-7**
प्रकाशक: भूतात्मा प्रकाशन
प्रकाशक -: योगेश वसंत बोरसे
संपादक -: रोहित योगेश बोरसे
© सर्वाधिकार सुरक्षित :- लेखक: योगेश वसंत बोरसे

Publications

# मूर्ति...

[१]
[२]
[३]
[४]
[५]
[६]
[७]
[८]
[९]
[१०]
[११]
[१२]
[१३]
[१४]
[१५]
[१९]

[२०]
[२१]
[२२]

# -:प्रस्तावना:-

नमस्कार दोस्तों - मैं, योगेश वसंत बोरसे, आप सभी का भूतात्मा पब्लिकेशन {बीजीएसएम प्रोडक्शन - बोरसे ग्रुप सक्सेस मिशन} में स्वागत करता हूं।
दोस्तों, हमारे बचपन में, लगभग 80 और 90 के दशक में, बच्चे अपना अधिकांश समय घर के बाहर खेलने और घूमने में बिताते थे। हम लुका-छिपी, लंगड़ाना, लिंगोर, अबाधुबी, स्टैच्यू, खो खो, बैट बॉल और ब्लाइंड सलाद जैसे कई खेल खेलते थे। उस समय घर बड़े-बड़े होते थे, हवेलियाँ होती थीं, मिलें होती थीं, नौकर-चाकर होते थे, यहाँ तक कि अगर 10 से 15 परिवार भी होते थे, तो वे गोविंदा के गुणों से धन्य होते थे। वे सब साथ रहते थे। इसलिए बच्चे उनके साथ दिन भर, कभी-कभी रात तक भी रहते थे...
तो दोस्तों, यह एक ऐसी ही कहानी है - एक बेहद रोमांचक डरावनी कहानी जो एक खेल से शुरू होती है और फिर भी एक डरावनी कहानी का रूप ले लेती है!
आपको अतीत में ले जाएगा! और बेहद दिलचस्प भी!
दोस्तों, हालांकि यह डरावनी कहानी काल्पनिक है, लेकिन यह वास्तविक स्थिति से काफी मिलती-जुलती है। इस कहानी के पात्र काल्पनिक हैं, लेकिन वे हमारे आस-पास ही मौजूद हैं। इतना कि इसे पढ़ते समय ऐसा लगता है मानो कोई सचमुच हमारे आस-पास ही है!
इसलिए - अपना ख्याल रखें। कृपया ध्यान दें कि यह डरावनी कहानी कमजोर दिल वालों के लिए नहीं है! कुछ दृश्य विचलित करने वाले हैं!
इसलिए अपना ख्याल रखें और इस डरावनी कहानी के रोमांच का अनुभव करें - हर दृश्य आपकी आंखों के सामने घटित होगा...
मुझे पूरा यकीन है कि आपको यह पसंद आएगा।
आपका –
लेखक:- श्री योगेश वसंत बोरसे

लेखक :-योगेश वसंत बोरसे

Publications

# [१]

गर्मी का दिन था। बच्चे आंगन में खेल रहे थे। छुट्टियों के कारण पूरा दिन खेलने में ही बीत गया।

खेलते-खेलते शाम हो गई। चारों ओर पेड़ थे और बीच में खुला मैदान था! कुछ आठ साल के थे, कुछ दस साल के, कुछ बारह साल के, लड़के और लड़कियां सब!

खेलते-खेलते थककर वह एक जगह बैठ गई। सोचने लगी कि क्या खेले! कुछ ने हाँ कहा, कुछ ने ना! अंत में, एकी ने सुझाव दिया,

"'अरे, क्या तुम स्टैच्यू स्टैच्यू खेलना चाहते हो?'"

कौन जाने क्यों? लेकिन सब सहमत थे... इसलिए एक लड़के ने यह विचार रखा,

"अगर हम साथ में स्टैच्यू और लुका-छिपी खेलें तो कैसा रहेगा?"

"आप कैसे हैं?"
"कुछ मूर्तियाँ बन जाएँगे, कुछ छिप जाएँगे! जिसके पास शक्ति होगी, वह छिपने वालों को ढूँढ़ लेगा और मूर्ति को हिला देगा! लेकिन अगर कोई पीछे से आकर उसे चुरा ले, तो उस पर फिर से शासन किया जाएगा, अन्यथा, जो पहले बाहर आएगा, उस पर शासन किया जाएगा!...."
कुछ बच्चों को यह विचार पसंद आया, कुछ को समझ आया, कुछ को नहीं!
खेल शुरू हुआ और पहला राज्य रेवती पहुंचा।
रेवती !
प्यारी आठ साल की बच्ची!
रेवती दो-तीन पारियों में राज्य को अपने हाथ में लेने से थक गई थी। उसने कोशिश की, लेकिन कोई भी उससे बच नहीं पाया। उसे एक विचार आया और उसने फिर से राज्य पर कब्ज़ा कर लिया। अब चार लड़कियाँ छिप गईं और चार लड़के मूर्ति बन गए। रेवती एक पेड़ के नीचे सिलाई करने गई, यह सुनिश्चित करने के बाद कि कोई उसे नहीं देख रहा है, वह भी एक पेड़ के पीछे छिप गई।
दो-तीन मिनट हो गए हैं, बच्चों को अभी तक समझ नहीं आया? ये अभी तक क्यों नहीं आया?
उनके हाथ-पैर सुन्न पड़ने लगे। कब तक ऐसे ही खड़े रहेंगे? क्या मूर्ति बन जाएँगे? चारों ने हार मान ली और लड़कियों को पुकारा। लड़कियाँ भी एक-एक करके पेड़ के पीछे से बाहर आ गईं।
रेवती को किसी ने नहीं देखा!
सब लोग बहुत डरे हुए और गुस्से में थे!
क्या वह घर से भाग नहीं गई थी?
हो गया! सारे बच्चे रेवती के घर आ गए!

"रेवती ? ए रेवती ?"
रेवती की मां बाहर आ गई।
"आखिर हुआ क्या?"
"रेवती आंटी ने अपनी योजना छोड़ दी और भाग गईं!"
"नहीं! रेवती घर नहीं आई! जब से वह तुम्हारे साथ खेलने गई है, तब से वापस नहीं आई!" सीमाताई का दिल बैठ गया!
बच्चे अब असमंजस में हैं और डरे हुए हैं!
बच्चे फिर से भाग गए और खोजने लगे!
काफी देर तक ढूंढने के बाद रेवती एक पेड़ के पीछे मिली!
"रेवती? तुम यहाँ क्या कर रही हो? रेवती?"
लेकिन वह हिली तक नहीं। उसकी आँखों में अपार भय था! उसका शरीर पसीने से भीगा हुआ था!
"आंटी स्स्स्स, रेवती यहाँ है!"
सीमा दौड़ती हुई आई।
"रेवती? ओह बेबी?"
रेवती टस से मस नहीं हुई! जैसे ही उन्होंने उसे हिलाने की कोशिश की, वह चौंक गई!
"अरे, इतनी गर्मी किस बात की है?"
किसी ने रेवती के पिता को बुलाया, एक लड़का दौड़कर आया और एक चादर लाकर रेवती को लपेट दी। रेवती के पिता ने उसे उठाया और घर ले गए।
डॉक्टर को बुलाया गया, डॉक्टर ने उसकी जांच की।
"वह बहुत डरी हुई है! वह कहाँ चली गई?"
मैं बच्चों के साथ आंगन में खेल रहा था! पास में ही एक किला है, वहां बहुत सारे पेड़ हैं, मैं उनमें से एक के पीछे खड़ा था, तब से यह ऐसे ही है!

रेवती के हाथ-पैर लकड़ी की तरह अकड़ गए थे। वह हिल नहीं पा रही थी। न ही बोल पा रही थी। बस उसकी आँखें काँप रही थीं! उसकी आँखों में बेहद डर झलक रहा था!

"उसे भर्ती कराना ही पड़ेगा!" डॉक्टर ने गंभीरता से कहा।

रेवती को भर्ती कराया गया। बेशक, उसे भर्ती कराया ही गया!

➤➤➤➤➤➤

[२]

रात में, सीमाताई रेवती के पास ही रुकी रही। वह उसके पास बैठी थी। रात लंबी होती गई। आधी नींद में, आधी खामोशी में, पता नहीं समय क्या हो रहा था?

पूरा अस्पताल लगभग सो रहा था। कभी-कभार किसी की बातचीत सुनाई देती थी। रेवती को एक अलग कमरे में भर्ती कराया गया था। उसका बुखार उतर चुका था। इंजेक्शन के कारण वह चैन से सो रही थी। पता नहीं कितना समय बीत गया था?

" आईssss "

सीमाताई चौंक गई, उसने आवाज़ की दिशा में देखा। रेवती उसके सामने खड़ी थी। उसे यकीन ही नहीं हो रहा था कि यह सच है! क्योंकि रेवती पलंग पर शांति से सो रही थी। उसने फिर से आवाज़ की दिशा में देखा,

"माँ, वहाँ एक लड़की थी। उसने मुझे खेलने के लिए बुलाया और एक मूर्ति बनाई। उसके हाथ में एक गुड़िया थी। लकड़ी की! और वह मेरी आँखों के सामने ही गायब हो गई।"

वह फिर से महल के दरवाजे के पास खड़ी दिखी और गायब हो गई। फिर वह ऊपर वाले कमरे की खिड़की से मुझे गुस्से से घूरती रही! माँ, उससे कहो कि पारी छोड़ दे! मेरे हाथ-पैर काँप रहे हैं! मैं डरी हुई हूँ! माँ, उससे कहो!

और उसके सामने खड़ी रेवती गायब हो गई। बेशक, वही रेवती जो सीमाताई के सामने दिखाई दे रही थी! सीमाताई सो गई।
"रेवती सससस"
वे जोर से चिल्लाए। उनकी आवाज सुनकर नर्स दौड़कर आई।
"क्या हुआ, सीमा?"
सीमा, मुझे नहीं पता कि क्या कहूँ।
"ज़रा उसे देखो, वह कब से सो रही है? आवाज़ करने पर भी वह नहीं जाग रही!"
"अरे चाची, इंजेक्शन असर कर रहा है। अगर वो सो जाए तो जल्दी ठीक हो जाएगी। उसे मानसिक आघात लगा है! लेकिन आपकी तसल्ली के लिए एक बार देख लेते हैं।"
नर्स ने अच्छी तरह से जांच की। रेवती का बुखार तो उतर गया था, लेकिन उसके शरीर का तापमान तेजी से गिर रहा था और शरीर ठंडा पड़ रहा था। उसने उसकी नाड़ी जांची। धड़कनें अनियमित थीं।
"मैं डॉक्टर सीमा ताई को बुला रही हूँ! वह यहीं हैं।"
"अरे लेकिन... बताओ क्या हुआ?"! लेकिन नर्स रुकी नहीं। वह बाहर गई और डॉक्टर को बुलाया। डॉक्टर कुछ दिनों से अस्पताल के ऊपरी कमरे में ही रह रहे थे! ताकि आपातकालीन स्थिति में जल्दी आने की ज़रूरत न पड़े! इसलिए वह तुरंत नीचे आ गए। वह दौड़कर रेवती के कमरे में गए। उन्होंने उसकी जाँच की।
"ये बहन क्या है? क्या वो बिल्कुल ठीक है?"
नर्स को यकीन नहीं हुआ। उसने दोबारा जांच की, रेवती बिल्कुल ठीक थी। "माफ़ कीजिए सर!"
"कोई बात नहीं! दोबारा ऐसी गलती मत करना।"
भाई, क्या हुआ?

सीमाताई ने डरते हुए पूछा। डॉक्टर माधव, रेवती के पिता केशव राव के मित्र थे। और सीमाताई उनकी अच्छी परिचित थी। उनका परिवार अच्छा था।

"कुछ नहीं है भाभी, चिंता करने की कोई बात नहीं है। अब वह पहले से भी बेहतर है!"

"परन्तु भैया..."

"तुम्हारी बहन को क्या हुआ?"

"नहीं.....कुछ नहीं हुआ..लेकिन...क्या हुआ..."

सीमा ने अपना अनुभव साझा किया।

डॉक्टर चुपचाप सुनता रहा।

"क्या वाकई वहां कोई महल है जैसा कि वाहिनी रेवती कह रही हैं?"

"हाँ, है! लेकिन मैंने कभी इस पर ध्यान नहीं दिया! किला बहुत पुराना होगा। वहाँ कोई नहीं रहता। इसलिए मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैंने जो देखा वह सच है या नहीं।"

"देखो भाभी, ज्यादा तनाव मत लो! तुम थकी हुई हो! अब सो जाओ! रेवती की चिंता मत करो! ठीक है? क्या मैं जाऊं?"

सीमा ने सिर हिलाया और डॉक्टर चले गए।

सीमा ताई ने रेवती के बगल में थोड़ी जगह बनाई और वहीं सो गईं। उन्हें पता ही नहीं चला कि कब उन्हें नींद आ गई, वे अपने बालों और शरीर पर हाथ फेरती रहीं।

➤➤➤➤➤➤

**[३]**

जब वह उठी तो सुबह हो चुकी थी। अस्पताल में शोर बढ़ गया था। सीमा ताई को चैन नहीं आ रहा था। कुछ देर बाद रेवती के पिता आए। उसने उनसे बात की। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे।

रेवती अभी भी सो रही थी। सुबह करीब 9:30 बजे सीमा ताई के पड़ोसी कुलकर्णी अजी और देशपांडे अजी रेवती को देखने आए। सीमा ताई ने उनसे कुछ फुसफुसाकर कहा।
कुलकर्णी अजी को इसके बारे में कुछ तो पता होगा। इसीलिए वह सीमाताई के करीब चली गईं।
"सीमा से मेरा क्या तात्पर्य है?..."
"क्या, चाची?"
"अरे, तुमने जो देखा वो पूरी तरह गलत नहीं था! शायद तुम्हारे और रेवती के दिल जुड़े हुए थे, इसीलिए ऐसा हुआ!"
उस महल में, रेवती की उम्र की एक लड़की कई साल पहले मर गई थी! उसका नाम पार्वती था! उसे बुखार था। कई दिनों तक बुखार कम नहीं हुआ। उसके पास हमेशा एक गुड़िया रहती थी। एक लकड़ी की गुड़िया! उसने उसे अंत तक नहीं छोड़ा। बिल्कुल अंत तक!
उनकी मृत्यु हो गई और महल का पतन शुरू हो गया। धीरे-धीरे उसकी शान मिट गई! परिवार के मुखिया की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई। परिवार देश-विदेश भटकने लगा। मुझे उस महल में जाना पड़ा।
पार्वती की माता का नाम यशोदाबाई था! उनके भाषण में अक्सर पार्वती का जिक्र होता था, मानो पार्वती अभी भी इसी महल में निवास कर रही हों!
पहले तो उन्हें लगा कि यह मन का खेल है। लेकिन फिर उन्होंने इसे रात में, आधी रात में, दिन के बीच में अनुभव किया। और कितना बड़ा झटका! क्योंकि यह अस्वाभाविक था! भला कोई आत्मा की गति को कब तक सहन कर सकता है? वह थक गई, उसने खाना-पीना छोड़ दिया! वह कब तक ऐसे ही जीती रहेगी? एक दिन उसकी मृत्यु हो गई!
फिर वह किला एक गाँव बन गया। उस किले में कोई नहीं आता था! कुछ

लोग कुछ कहना चाहते थे, कुछ चुप! बस यूँ ही, एक दिन एक रिश्तेदार ने किले में ताला लगा दिया, और फिर धीरे-धीरे सारी बातचीत बंद हो गई! लेकिन फिर वे वापस भी नहीं आए!

लेकिन चूंकि मैं वहां रहती थी, शायद मेरी नाल उस महल से जुड़ी हुई थी! पार्वती से, यशोदाबाई से जुड़ी हुई थी! कभी-कभी रात में मैं अचानक जाग जाती थी। कोई मुझे पुकार रहा होता था, इतनी पीड़ा से! किसी की चीख मेरे कानों तक आती थी, मानो बहुत पास से आ रही हो! मुझे नींद नहीं आती थी! लेकिन समय बीतने के साथ-साथ तीव्रता कम होती गई! फिर धीरे-धीरे मैं विस्मृति में विलीन हो गई।

लेकिन अब तुमने पुरानी यादें फिर से ताजा कर दीं। अब मुझे लग रहा है कि मैं उन बातों से परेशान हो जाऊँगी! शायद जो कुछ भी हो रहा था, वो फिर से सुप्त अवस्था से जाग उठा है! और तुम्हारा बच्चा उस गड़बड़ में ही मिला होगा!

यह कहकर आंटी चुप हो गईं। उनके बोलने के बाद देशपांडे अजी ने कहा, "सीमा जो कह रही है वो बिलकुल सही है! बस लड़की का ध्यान रखना, ध्यान रखना! वरना लड़का बेकाबू हो जाएगा!" "क्या अब चलें?" इतना कहकर वे दोनों चले गए।

सीमा का दिल बैठ गया! दादी के शब्द उसके कानों में गहरे तक गूंज रहे थे, मानो उन पर गहरा असर छोड़ गए हों, "बस इस लड़की का ख्याल रखना, वरना लड़का खो जाएगा!"

'आपकी बेटी का कसूर क्या है? क्या वह खेलते-खेलते उस महल के पास गई थी? या उसे अनजाने में वहाँ घसीटकर ले जाया गया था? अब मुझे क्या करना चाहिए?'

दूसरे चरण में उन्होंने एक साहसिक निर्णय लिया। उन्होंने नर्स से रेवती पर नजर रखने को कहा और वे चले गए।

"अब समय आ गया है कि हम उस किले को नज़रों से ओझल कर दें। अगर कुछ किया जा सकता है, तो जल्दी किया जा सकता है, लेकिन हम अपने साथ किसे ले जाएं? या क्या हमें किसी को बताना चाहिए? हम उन्हें बताने के बाद यह सब सुनना नहीं चाहते! और अगर वहां हमारे साथ कुछ हो भी जाता है, तो किसे पता चलेगा?"
सीमा सबसे पहले घर गई, और रेवती के पिता आश्चर्यचकित रह गए।
"अरे, मगशी, तुम मुझे क्यों नहीं बताते? लड़का वहाँ अकेला है!"
"ठीक है, तुम जल्दी जाओ! मैं रसोई में खाना बनाऊंगी, अपना डिब्बा वहीं ले आओ! थोड़ी देर हो जाएगी, लेकिन वहीं इंतजार करना, घर मत आना!"
" का गं ? "
"कुछ नहीं, बस थोड़ी देर के लिए बाहर जाना है! मुझे अपना सामान लेना है!"
"अच्छा, तो मैं इसे ले आऊंगा!"
"अरे, तुमने अभी कहा था, 'लड़का अकेला है, है ना? तुम जाओ और मैं उसका ख्याल रखूंगा! बस वहीं इंतजार करो जब तक मैं वहां नहीं पहुंच जाता!'"
"सीमा, तुम्हें क्या हुआ है?"
"ये व्हाट कहां है?"
"सीमा, क्या किसी ने तुमसे कुछ कहा?"
"किस बारे मेँ?"
"रेवती के बारे में?"
"देखो, अभी तुम्हारे लिए उसके साथ रहना ज़्यादा ज़रूरी है। बाकी सब लोग जब आ जाएँगे, तब मैं तुम्हें सब कुछ बता दूँगा! जल्दी जाओ!"
रेवती के पिता स्कूटर लेकर अस्पताल की ओर चल पड़े!

सीमा ताई ने घर की अच्छी तरह सफाई की। थोड़ा खाना बनाया। दरवाजा बंद किया! और कुलकर्णी आंटी के घर चली गईं।
"आंटी सस्स"
चाची बाहर आ गईं।
"क्या हुआ, सीमा? कैसी हो?" चाची... "वह अपनी चाची के पास गई और धीरे से बोली, "मैं उस महल में जा रही हूँ!"
"अरे, तुम क्या बात कर रहे हो? क्या तुम पागल हो गए हो? तुम्हें इसमें क्या मजेदार लगा?"
"नहीं, चाची! लेकिन मैं अपनी बेटी की जान बचाने के लिए अपनी जान दे दूंगी!"
और अगर इसका कोई फायदा न हो तो?
"आंटी!"
सीमा को अपनी चाची की बातें पसंद नहीं आईं!
"देखो, गुस्सा मत करो! किसी को बचाने के लिए अपनी जान देना बुद्धिमानी नहीं है! चलो, मैं तुम्हारे साथ चलता हूँ!"
"आंटी, आप अपनी जान जोखिम में क्यों डाल रही हैं?"
"अरे, मुझमें क्या खराबी है? मैंने तो अपनी जिंदगी जी ली है! लेकिन बेटी को पालने-पोसने की जिम्मेदारी तो तुम्हारी है!"
चलो देखते हैं! यह महल मेरे पैरों तले है! बहुत समय बीत गया है, लेकिन कोई बात नहीं! चलो...!
➤➤➤➤➤➤

[४]

दोनों ने सावधानी से चलना शुरू किया। उन्होंने वही रास्ता चुना जहाँ रेवती छिपी हुई थी। पेड़ के पीछे! किले की दीवार उस तरफ से ढह गई थी। उन्होंने जीवन में कभी इस तरह छिपकर यात्रा नहीं की थी। लेकिन आज

उनके पास कोई विकल्प नहीं था।
वह एक निर्दोष लड़की की जान बचाना चाहता था! उसने हाथ जोड़कर ईश्वर से क्षमा मांगी। वह दीवार पार करके महल में दाखिल हुआ। उसे बाद में पता चलेगा कि वह जो कर रहा था वह सही था या गलत।
अब इसके बारे में सोचने का कोई फायदा नहीं था। महल के दरवाजे पर एक बड़ा ताला लगा हुआ था!
अब क्या? तुमने तो ध्यान ही नहीं दिया!
"मौसी, क्या कोई इतने बड़े महल को यूं ही छोड़ देगा? चलो कम से कम बाहर से तो देख ही लेते हैं!"
वे महल के बाहरी हिस्से से घूमकर गए। पीछे की तरफ एक लकड़ी की सीढ़ी थी। दरवाजा टूटा हुआ था। सीमाताई ने कांपते हाथों से आगे बढ़कर दरवाजा खोल दिया! वह इस तरह किसी के घर में कैसे घुस सकती थी? छुप-छुप कर? सीमाताई को अपराधबोध हो रहा था। लेकिन कोई चारा नहीं था, कम से कम उसे यही लग रहा था कि लड़की के कष्ट को कम करने का यही एकमात्र तरीका है!
मैंने दरवाजा धक्का देकर खोला, और उसके बाद के कुछ पल जानलेवा साबित हुए। सीढ़ियों पर अंधेरा था। दिन में भी अंधेरा था! रात में क्या हाल होगा? सोचने का कोई फायदा नहीं था। मैं लकड़ी की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था।
"सीमा, तुम्हें अपने साथ कुछ लाना चाहिए था।"
"आपका क्या मतलब है?"
"यह तो कमाल की बैटरी है!"
दोनों धीरे-धीरे बात कर रहे थे।
"अरे चाची, आपको क्या पता? क्या इस इलाके में अंधेरा होने की वजह से ऐसा हो रहा है? या फिर दिन का समय है?"

"हाँ, मुझे तो मरने का भी याद नहीं है!"
"छोड़ो, चाची! मुझ पर ज़बरदस्ती मत करो! आपके मेरे साथ आने में क्या बुराई है?"
वे दोनों लड़खड़ाते हुए चोटी पर पहुँच गए। ऊपर ज़रूर कोई कमरा रहा होगा, कम से कम वहाँ एक ही दरवाज़ा था, अंदर जाते ही पता चल जाता। इस दरवाज़े पर ताला नहीं था।
"आंटी, इसका क्या मतलब है? क्या यहाँ कोई छिपा हुआ नहीं है? ज़रूर उनकी बेटी होगी!"
"पागलों जैसी बातें मत करो! यहाँ इंसानी मौजूदगी का कोई निशान नहीं है। कम से कम अभी तो नहीं! हो सकता है पहले यहाँ कोई रहता हो, लेकिन किसी अनुभव ने उन्हें भागने पर मजबूर कर दिया हो! चलो, जब हम इतनी दूर आ ही गए हैं, तो एक नज़र डाल लेते हैं, अंदर जाकर देखते हैं!"
उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था! दृढ़ निश्चय के साथ सीमा ने दरवाजा खोल दिया।
और... उनके दिलों में एक भयानक भय उत्पन्न हो गया! उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई छोटी बच्ची हंसते हुए अंदर भाग आई हो! क्या यह सपना था या सच? उन्हें कैसे पता चलेगा?
मेरे पास जो कुछ मैंने देखा उसे सच मानने का अनुभव नहीं था, और मेरा दिमाग यह मानने को तैयार नहीं था कि यह झूठा या काल्पनिक था!
"देखो, यहाँ से निकल जाओ! दरवाजा बंद करो!"
"लेकिन चाची...!"
"सीमा... वो कह रही है ना कि चली जाओ?" आंटी ने सीमा का हाथ पकड़कर उसे खींचा। उन्होंने दरवाजा बंद करके ताला लगा दिया। वो सीढ़ियों से नीचे उतरीं। अब चक्कर लगाने की कोई ज़रूरत नहीं थी। वो

घर की तरफ मुड़ीं। घर पहुँचते-पहुँचते वो पसीने से भीग चुकी थीं!
वह सीधे सीमा के घर गई।
सीमा ने तांबे के गिलास में पानी भरा। दोनों बैठ गईं और घूंट-घूंट कर पानी पीने लगीं।
"आंटी? अब मुझे क्या करना चाहिए?"
"सीमा, तुम्हारा क्या ख्याल था? क्या ये एक दिन का काम है? अरे वाह, हम तो खुशनसीब हैं कि वापस आ गए!"
"अरे आंटी...लेकिन..."
"अरे बाघ सीमा, अब इस विषय को यहीं रोको! ये खुद खाना पकाने का क्या मतलब है?"
"जी आंटी, हो गया है। वह दो निवाले खाकर चली जाती है। आप भी थोड़ा ले लीजिए।"
"नहीं, मैंने अपना खाना तैयार कर लिया है। आप खाकर जाइए! अगर आप चाहें तो मैं रुक जाऊंगा।"
आंटी तब तक बातें करती रहीं जब तक सीमाताई का खाना खत्म नहीं हो गया। फिर सीमाताई ने बर्तन भर दिया। वह बाहर आई और दरवाजा बंद कर दिया। उसने ताला लगाया और चाबी आंटी को दे दी।
"बच्चे का ध्यान रखना। जल्दी जाओ! एक बज चुका है!" सीमा चली गई।
लेकिन अब सबकी निगाहें महल के रास्ते पर टिकी थीं। एक अजीब सी उत्सुकता जाग उठी थी।
यही सोचकर वो अस्पताल पहुँची। रेवती को होश आ गया था! वो उठकर बैठ गई थी। ये देखकर सीमा का दिल बैठ गया। वो उसके पास बैठ गई।
"प्रियेसी तुम कैसी हो?"
"माँ, क्या आपने उसे देखा है?"
केशवराव और सीमाताई को गहरा सदमा लगा! कारण अलग-अलग थे,

सीमाताई को कैसे पता चला? यह सीमाताई का सवाल था, और सीमाताई उस लड़की के बारे में जानती है, तो हेरेवती को कैसे पता चला? यह केशवराव का सवाल था।

"बेबी, क्या तुम उठ रही हो? मैं चावल लाई हूँ! क्या तुम थोड़ा खाना चाहोगी? नहीं तो, आलू की भजी खा लो।"

"माँ, क्या तुमने उसे देखा है? मुझे सच बताओ!"

सीमाताई का गुस्सा झूठा था।

"रेवती? बेबी, ये सब क्या बकवास है? तुम किसके बारे में बात कर रही हो? चुपचाप खाओ और सो जाओ!"

"माँ, क्या तुम डरी हुई हो? ..." रेवती के चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कान आ गई।

"क्या तुम बाबा से डरते हो? बाबा तो तुम्हें बिना बताए ही वहाँ चले गए!" मैं केशवराव की बात समझ गया था। लेकिन अभी उस बारे में बात करने का समय नहीं था।

"रेवती, बेटा, तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है, है ना? इसीलिए तुम्हें ऐसा लग रहा है! देखो, ज्यादा मत सोचो! अच्छा खाना खाओ! अपनी दवा लो और सो जाओ! मैं शाम को डॉक्टर से बात कर लूंगी और फिर, अगर हो सका तो, हम आज ही घर चले जाएंगे!"

केशव राव की बातें सुनकर रेवती के चेहरे के भाव बदल गए। वह बहुत डर गई थी।

"नहीं! मैं घर नहीं आना चाहती! वह कल घर आई थी! वह आज अपनी माँ के बाद घर आई! और उसकी माँ ने उसे घर में बंद कर दिया!"

"क्या?"

यह उन दोनों के लिए बहुत बड़ा झटका था।

“रेवती, बेटा, क्यों रो रही हो?” रेवती के पिता ने डॉक्टर को बुलाया। नर्स

दौड़ती हुई आई!
"चाचा जी, क्या हुआ?"
"कृपया, क्या आप डॉक्टर को बुला सकते हैं? देखिए, ये कितनी अजीब तरह से बात कर रही है! ये बहुत डरी हुई है!"
"पापा, मुझे आपके लिए डर लग रहा था! अकेले घर मत जाओ! वह हमारे घर में घुस गई है! जो भी पहले घर में घुसेगा, वह उसे मूर्ति बना देगी! और उसे भी मेरी तरह ही कष्ट सहना पड़ेगा! मम्मी, आपको वहां नहीं जाना चाहिए था!"
"आप क्या?"
"जी बाबा, वो और कुलकर्णी अजी दोनों वहीं गए थे। जब आप यहां आए! और वो उनके पीछे-पीछे हमारे घर आ गईं।"
"रेवती, बस करो! ये क्या पागलपन है?"
"नहीं, पिताजी, मेरी बात सुनिए। अगर आपको लगता है कि यह झूठ है, तो अकेले घर जाकर खुद देख लीजिए। नहीं तो, दो-तीन लोगों के साथ जाइए। माँ, आपने घर पर जो भी खाना बनाया होगा, सब खत्म हो जाएगा!"
सीमाताई, केशवराव और नर्स तीनों को चक्कर आ रहे थे। तभी डॉक्टर आ गए।
केशव, क्या हुआ?
"ओह माधव, देखो तुम कितनी बकवास कर रहे हो।"
"रेवती? बेबी, क्या हुआ? क्या तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है?"
"चाचा जी, मैं बहुत ताकतवर हूँ! क्या आप मूर्ति बनना चाहते हैं? तो अकेले हमारे घर आइए और देख लीजिए। अगर आपको लगता है कि मैं गलत हूँ, तो मुझे पागल कह दीजिए! फिर मैं आपके दिए दंड को भुगतने के लिए तैयार हूँ!"

"ठीक है, ठीक है, अगर आप कहते हैं तो हम करेंगे! लेकिन पहले हमें खाना खाना है, फिर दवा का इंजेक्शन लगवाना है और आराम करना है। क्या आप घर जाना चाहते हैं?"
रेवती दोबारा सो गई।
"चाचा जी, मैं घर नहीं जा रहा। वो हमारे घर में है!"
"ठीक है, ठीक है! तो क्या आप हमारे घर आएंगे? हमारे घर में एक छोटा बच्चा है। क्या आपको छोटे बच्चे पसंद हैं?"
रेवती की कली खिल गई।
"हां, मुझे बच्चे बहुत प्यारे लगते हैं!"
"तो फिर क्या होगा अगर! आप सब आज शाम हमारे घर आना चाहें?"
"लेकिन आप तो यहीं ऊपर रहते हैं, है ना?"
"जी मैडम..." डॉक्टर ने उनकी प्रशंसा महसूस की।
"क्या हाल है? कुछ मरीज़ों की सेहत बहुत गंभीर है, है ना? तो फिर उनकी देखभाल क्यों न की जाए? अगर उन्हें रात में कोई परेशानी हो जाए तो? इसीलिए मैं यहाँ रुकी हूँ। अब मैं बच्चे को यहाँ नहीं रख सकती। इसीलिए मैंने उसे घर पर उसके मम्मी-पापा के साथ रखा है! तो क्या आप शाम को आएँगी?"
"हाँ, मैं ज़रूर आऊँगा!"
रेवती के खुश चेहरे को देखकर सभी को अच्छा लगा।
"हाँ, जान, चलो चलते हैं! लेकिन तुमने अभी तक खाना नहीं खाया है! पहले खा लो!"
"उसे एक सीमा दो! मैं यहाँ हूँ!"
डॉक्टर और केशवराव बाहर आए, सीमाताई ने रेवती को खाना खिलाया और रेवती के पिता को बुलाने के लिए कमरे से बाहर चली गईं।
"अरे, तुमने खाना नहीं खाया!"

"तुम पहले यहाँ आए! क्या हो रहा है? क्या मुझे कुछ पता चल सकता है?"
"देखो, वो खाना खा रही है, तुम उसके साथ बैठो। फिर वो खा लेगी! जब वो सो जाएगी तब हम बात करेंगे! चलो!" केशवराव को भी यही सही लगा।
"माधव, मैं तुमसे बाद में बात करूंगा!"
"ठीक है!" डॉक्टर ने कहा और चला गया।
केशवराव और सीमाताई कमरे में आए। रेवती खिड़की के पास बिना कुछ खाए खड़ी थी।
"रेवती, चलो बेटा, बाबा के साथ खाना खाने चलते हैं!"
रेवती को बहुत अच्छा लगा होगा! उसके पिता ही उसकी जिंदगी थे। वह खाना खाते समय कुछ न कुछ बातें करती रहती और बीच-बीच में चुपचाप बैठी रहती।
दवा का इंजेक्शन लगने के कुछ ही देर बाद रेवती सो गई।
"सीमा ,आता बोलशील ?"
सीमा ताई ने धीमी आवाज़ में सब कुछ बताया। सच या झूठ, सच्चाई या भ्रम? यह मुद्दा नहीं था। रेवती ने उसे सीधे चुनौती दी थी। अकेले घर मत जाओ! अगर जाओ तो दो-तीन लोगों के साथ जाओ! बाकी खाना तो पूरा करना ही है!
मेरे पास बस एक ही विकल्प था, अभी तुरंत सब कुछ पक्का कर लेना! लेकिन मैं अपने साथ किसे ले जाऊं? मैं क्या कहूं? कोई भी मुझ पर हंसेगा और मुझे पागल कर देगा!
मुझे सीमा के बारे में क्या करना चाहिए?
"अरे, मुझे लगता है हम दोनों को जाना चाहिए, नर्स से कहो कि उस पर नज़र रखे! यहाँ कोई खतरा नहीं है। चलो कुलकर्णी आंटी के पास चलते

हैं, उनके कान में धीरे से कुछ कहते हैं। अगर आप चाहें तो हम उसे भी साथ ले जा सकते हैं। बस एक ही समस्या है, वह यहाँ आने वाली थी। हम नहीं चाहते कि वह हमारी गलतियों के बारे में चुप रहे।"
"चलो देखते हैं!"
नर्स को सब कुछ बताकर वे जैसे ही जाने वाले थे, तभी पीछे से एक आवाज़ आई। "माँ, पिताजी, अपना ख्याल रखना! मैं सच कह रहा हूँ, मुझ पर भरोसा करो।"
"जी बेटा, चिंता मत करो, हम तुरंत वापस आ जाते हैं। और क्योंकि हमें तुम पर भरोसा है, तुम दोनों जा रहे हो, है ना? वरना अकेले क्यों जाओगे? तुम्हें डर तो नहीं लगेगा, है ना?"
नहीं! डरो मत!
"ठीक है, ठीक है, अब सो जाओ! चलें?"
"जी हां, जी हां! आपकी यात्रा मंगलमय हो और जल्दी वापस आना!"

➤➤➤➤➤➤

नर्स कमरे में ही रुकी रही। वे दोनों घर के लिए निकल पड़े। उनके पास स्कूटर था, इसलिए वे जल्दी घर पहुँच गए। वे सीधे कुलकर्णी आंटी के पास गए।
"आंटी?"
"क्या आप सीमा पर पहुँच गए हैं? और आप दोनों आ गए हैं? क्या हुआ? क्या रेवती बारिया ठीक है? उसके साथ कौन है?"
"मौसी, दो मिनट के लिए अंदर आ जाइए!" "मौसी, मुझे लगता है कुछ हुआ है!"
सीमा का क्या हुआ? आओ बैठो!
सीमा ताई ने उसे सब कुछ बता दिया। आंटी ने उसे पानी दिया। पानी पीने

के बाद उसने तुरंत कहा,
"चला !"
आंटी तुरंत उठीं और चली गईं। चार बज चुके थे। सीमा और केशवराव भी जल्दी से उठे। तीनों बाहर गए। आंटी ने दरवाजा बंद कर दिया। वे तुरंत चले गए। चाबी उन्हीं के पास थी।
उन्होंने जल्दी से दरवाजा खोला और अंदर भागे। उन्हें महसूस हुआ कि कोई कमरे में दौड़कर आ रहा है। चाची पीछे हट गईं!
"आंटी, श्श्श्श," सीमा ने फुसफुसाते हुए कहा।
"सीमा तो अंदर है! तुम्हारी बेटी सच कह रही है! हमें वहां नहीं जाना चाहिए था, वरना शैतान हमारा पीछा करता!"
"लेकिन चाची, हमें अंदर जाना होगा! यह घर हमारा है! बाहर क्यों रुकें?"
"रुको, सीमा, चलो साथ चलते हैं! चाची, क्या आप बाहर इंतजार करेंगी?" केशवराव ने पूछा।
"नहीं, मैं भी आ रहा हूँ!"
"तुम रसोई में जाओ, मैं उस कमरे में देखूंगा!"
"मौसी, ज़हर का परीक्षण मत करवाइए! हमारे साथ आइए! नहीं तो यहीं रहिए!"
आंटी उनके साथ चली गईं। रसोई के काउंटर पर खाना पकाने के बर्तन अस्त-व्यस्त पड़े थे। किसी ने पागलों की तरह खाना खाया होगा। खाना ज़मीन पर गिर गया था। सीमा हैरान थी। उसने तो खाना खाकर सब कुछ ठीक से ढक दिया था। अब क्या?
"अरे... सीमा, कुछ मत बोलो!"
"यहाँ से बाहर हो जाओ!"
"अरे, हमें इसे रोकना होगा! यह घर हमारा है! एक मिनट रुको!"
सीमाताई ने उसे रोकने की कोशिश शुरू की। आंटी आगे आईं। दोनों ने

मिलकर जल्दी से उसे काबू में कर लिया।
चलो अब चलते हैं!
"अरे, लेकिन वो लड़की?...."
सीमा कहती है, 'चलो चलते हैं, देखते हैं आगे क्या करती है!'
तीनों बाहर आ गए। केशवराव ने दरवाजा बंद कर दिया। उसने चाबी अपनी चाची को दे दी।
"आंटी, हम शायद आज रात डॉक्टर माधव के घर पर होंगे! सावधान रहना। रात में कुछ भी महसूस हो तो भी यहाँ इधर-उधर मत घूमना!"
"सीमा, मैं रेवती को देखना चाहती थी!" चाची ने कहा। सीमा सोच में पड़ गई।
"अरे, तुम स्कूटर पर जाओ, हम रिक्शा से आ जाएंगे।"
"ठीक है।"
"चलिए आंटी," ये तीनों निकल पड़े। वे अस्पताल पहुँचे। रेवती जाग चुकी थी और खिड़की के पास खड़ी थी। वह बाहर देख रही थी।
"बेटी, तुम कब उठी?" रेवती ने कोई जवाब नहीं दिया। सीमाताई ने दोबारा पूछा।
"बेबी, तुम कब उठी?"
"क्या माँ घर पर नहीं थीं?"
सीमा को कुछ समझ नहीं आया। उसे ये सब कैसे समझ आ गया?
"देखो, बच्ची, ज्यादा मत सोचो! क्या वो भी छोटी नहीं है? उसे अपना घर पसंद आया होगा! इसीलिए तो वो आई है! वो कुछ दिन रुकेगी और फिर चली जाएगी!"
"नहीं, माँ! वह जाने के लिए नहीं आई थी, वह मुझे लेने आई थी!"
"रेवती एसएसएस" सीमाताई कदाडल्या।
"माँ, गुस्सा मत हो! मैं ज़रूर जा रहा हूँ! तुमने कल रात जो देखा वो सच

था!"
" रेवती ? "
अपनी चाची की आवाज सुनकर रेवती पीछे मुड़ गई।
"दादी, क्या आप दादी हैं?"
और वह जाकर उनसे मिली और उनका अभिवादन किया।
"दादी, वो लड़की मुझे ले जाने आई है! मुझे डर लग रहा है!" यह कहते हुए वह रोने लगी।
आंटी उसे थपथपाती रहीं। फिर उन्होंने उसे बिस्तर पर लिटाया, उसे बिठाया, केशवराव भी आगे आया।
"रेवती, बेटा, ऐसे मत रोओ, हम सब रो रहे हैं, है ना? और हम घर नहीं जाना चाहते! चलो कहीं और रुकते हैं, ठीक है?"
रेवती को बेहतर महसूस हुआ होगा, वह धीरे-धीरे शांत हो गई।
"रेवती, तुमने मागा से क्या कहा? क्या मैंने जो देखा वह सच था?" सीमा ताई ने प्यार से पूछा।
"माँ, उसने मुझे मूर्ति बना दिया है। जब तक वह यह नहीं कह देती कि सब खत्म हो गया है, तब तक मैं पूरी तरह ठीक नहीं होऊंगा। उससे कहो कि वह कहे कि सब खत्म हो गया है! नहीं तो, आज भी कल जैसा ही होगा!"
"देखो, रेवती, अब तुम पूरी तरह ठीक हो गई हो! अब हमें डॉक्टर अंकल के घर जाना है। वहाँ एक छोटा बच्चा है! क्या तुम उसके साथ नहीं खेलोगी?"
"हो ! "
"चलें, ठीक है?" केशवराव ने उससे पूछा।
रेवती का चेहरा फिर से खिल उठा।
केशवराव बाहर आए और डिस्चार्ज पेपर पर हस्ताक्षर किए। उन्होंने बिल

का भुगतान किया। फिर वे डॉक्टर के केबिन में गए और डॉक्टर से मिले।
"अरे केशव तू बिल भरलस ? कुणी मागितलं ? "
डॉक्टर ने गुस्से से कहा।
"देखो, माधव, दोस्ती की जगह दोस्ती! व्यापार की जगह व्यापार! और बिल भी ज़्यादा नहीं था। चलो छोड़ो, मुझे तुम्हें कुछ बताना है..."
केशव राव ने अपने अनुभव को विस्तार से बताया। और यही है रेवती की मानसिकता!
"माधवा, पोरगी डरी हुई है! मुझे नहीं पता कि उसे इस स्थिति से कैसे बाहर निकालूँ!"
"चलो चलें! अगर तुम कुछ दिन बच्चे के साथ रहोगी, तो सब कुछ भूल जाओगी। फिर हमें पता चल जाएगा कि तुम्हारे घर में क्या चल रहा है! ज्यादा मत सोचो! चलो!"
वे दोनों केबिन से बाहर आ गए।
"भाभी, जल्दी आइए!"
रेवती? तुम बच्चे के पास जाना चाहती हो? और ये कौन है?
"हमारी कुलकर्णी आंटी के पास आइए!"
"ठीक है, नमस्ते चाची! आपको भी हमारे घर आना चाहिए!"
"नहीं, आज नहीं, मैं किसी और दिन आऊंगा! शाम हो गई है, दीये जलाने का समय हो गया है! घर बंद नहीं होना चाहिए! ठीक है, मैं सीमा पर जा रहा हूँ। अपना ख्याल रखना!"
"आंटी, मेरे साथ आइए, मेरे पास कार है, मैं आपको छोड़कर आगे चलूँगी!" सब लोग चले गए।
➤➤➤➤➤➤

मैंने अपने चाचा को घर पर छोड़ दिया, और डॉक्टरों की निगाहें गांव की

ओर गईं।
"अरे, ये तो किला है!"
डॉक्टर ने धीरे से पूछा। रेवती अपनी मां की गोद में सिर रखकर सो रही थी। लेकिन महल का जिक्र होते ही वह अचानक उठ बैठी।
मैं घर जाना चाहता हूँ, मुझे अकेला छोड़ दो!
" रेवती sss "
केशवराव जोर से चिल्लाया। तभी रेवती को होश आया।
"पापा, क्या हुआ? आप इतना क्यों चिल्ला रहे हैं?"
केशव राव को बहुत पसीना आ रहा था। उन्होंने अपनी जेब से एक रुमाल निकाला और पसीना पोंछा। डॉक्टर ने उन्हें हाथ से थपथपाया।
केशवराव सोच रहे थे। अगर वह इतने लंबे समय तक इतनी परेशानी खड़ी करती रहेगी, तो घर जाकर क्या करेगी? समस्या घर में है या महल में?
"माधव, चलो पता लगाते हैं कि उस हवेली का मालिक कौन है? और...."
तब तक डॉक्टर का बंगला आ चुका था। उन्होंने गाड़ी खड़ी की। सब लोग नीचे उतरे। डॉक्टर की पत्नी और माता-पिता ने उनका स्वागत किया।
"रेवती, बच्चा कैसा है?"
"दादी, बच्चा कहाँ है?"
रेवती ने उत्साह से पूछा।
"अंदर वाले कमरे में! पालने में सो रहा है! देखना चाहते हो? चलो फिर!"
" या ना ! "
रेवती उछलकर अंदर भागी। डॉक्टर की मां के पीछे-पीछे! सब लोग अंदर आ जाओ!
"आओ बैठो!" डॉक्टर केशवराव और उनके पिता हॉल में बैठ गए। फिर सीमा डॉक्टर की पत्नी स्नेहल के साथ रसोई में चली गई।
बच्चा सो रहा था। रेवती दूर से देख रही थी और तभी पूरा घर कांपने

लगा। स्नेहल ने पोहा बनाया। फिर चाय परोसी गई। बातें करते-करते डॉक्टर और माधव बाहर आए।
"हां, केशव, तुम उस जगह के बारे में क्या कह रहे थे?"
"ओह, मैं कह रहा था, क्या होगा अगर हमें पता चल जाए कि उस महल का मालिक कौन है?"
"अरे, तुम इसमें क्या ढूंढ रहे हो? उस चाची को पता होगा! वो तुम्हें बता देंगी!"
"अरे पिताजी, हमें अभी पता लगाना होगा कि मालिक कौन है! मैं उन लोगों की बात नहीं कर रहा हूँ जिन पर भूत-प्रेत का साया है!"
"और क्या कर?"
"वह किला प्रेतवाधित है! अगर वह गिर गया, तो वह नकारात्मक ऊर्जा नष्ट हो जाएगी! क्या ऐसा होगा या नहीं?"
"एक मिनट रुकिए, चलिए पिताजी से इस बारे में बात करते हैं!" डॉक्टर ने अपने पिता को फोन किया।
"क्या बात है, माधव?"
वह बाहर आया और बोला, "बाबा, दो मिनट के लिए अंदर आइए!"
पिताजी आए और उसके बगल में बैठ गए।
"केशव, क्या तुम मुझे सच बता रहे हो?" डॉक्टर ने कहा।
केशवराव ने बोलना शुरू किया। उसने पिछले दो दिनों में घटी सारी बातें बता दीं।
"केशवा, अगर ऐसा न हुआ जैसा तुम कह रहे हो तो क्या होगा?"
"आपका क्या मतलब है?"
"ओह, आप कह रहे हैं कि किला गिर जाएगा, जिससे वह प्रेतवाधित उपस्थिति नष्ट हो जाएगी! लेकिन इसका क्या मतलब है? वह ऊर्जा कहीं और क्यों नहीं चली जाती?"

"दरअसल, मुझे लगता है कि यही हो रहा है! यही हो रहा है! तो आपने उस लड़की को अपने घर में देखा। आप कहीं और क्यों नहीं चले जाते?"
"चाचा जी, ये सब क्या है? सवाल सिर्फ मेरे या मेरे परिवार के बारे में नहीं है! ये तो पूरे चाली के बारे में है! ये सब कहाँ जाएँगे?"
"लेकिन उन्हें कोई परेशानी तो नहीं हो रही है, है ना?"
डॉक्टर के पिता गंगाधर पंत ने कहा.
"आज तो नहीं, लेकिन कल क्यों नहीं होगा?" केशव राव ने अपनी शंका व्यक्त की।
"लेकिन जो भी भूतिया मौजूदगी है, उसे नष्ट करना होगा! माधव, मैं क्या कह रहा हूँ? नए अस्पताल के लिए वह जगह हमें कैसी लगती है?"
"पापा, हमने अभी तक वह जगह नहीं देखी! मतलब, लोकेशन तो अच्छी है, लेकिन उस जगह की कीमत कितनी है? रेट क्या है?"
"हमें अपने बजट पर ध्यान देना होगा! और हमारा गाँव भी बहुत बड़ा नहीं है! तो फिर बड़ा अस्पताल बनाकर हम क्या करेंगे? इसके अलावा, लोग कहते हैं कि वहाँ भूत है! हम इस पर विश्वास नहीं करते, लेकिन मान लीजिए कि किसी मरीज को कोई परेशानी हो जाए?"
डॉक्टर का सवाल बिल्कुल सही था! केशवराव ने इस बारे में सोचा। वह थोड़ा परेशान हो गया। अकेले इतनी संपत्ति खरीदने के लिए उसके पास पर्याप्त आर्थिक क्षमता नहीं थी! डॉक्टर को यह बात समझ आ गई।
"देखो, केशव, हिम्मत मत हारो! हम कोई न कोई रास्ता निकाल लेंगे!"
तभी सीमाताई और स्नेहल बाहर आईं। स्नेहल ने धीरे से पूछा,
"तुम किस बारे में बात कर रहे हो?"
वहाँ बैठने की व्यवस्था थी, इसलिए वह बैठ गई। "स्नेहल...." डॉक्टर ने सब कुछ समझाया।
"अरे, तुम क्या कर रहे हो? ये भूत-प्रेत वाली बातें तो बिलकुल ही अजीब

हैं! पुरानी इमारत में कुछ नकारात्मक ऊर्जा तो होगी ही! मैं समझ सकता हूँ! लेकिन भूत-प्रेत जैसी बातें तो बिलकुल ही असंभव हैं!"
"चलो इसका फायदा उठाते हैं! हम यहाँ अस्पताल, शॉपिंग मॉल, होटल या स्कूल भी बना सकते हैं! जो इस गाँव के लिए सबसे अच्छा होगा!" - स्नेहल
डॉक्टर ने बजट के बारे में कुछ नहीं कहा। केशवराव और गंगाधर पंत ने इस बात पर ध्यान दिया। बोलने वाले केशवराव नहीं बल्कि गंगाधर पंत थे।
"लेकिन सुनबाई, बजट का क्या होगा?"
"एक मिनट रुको, मैं माँ को फोन करती हूँ।" इतना कहकर स्नेहल डॉक्टर की माँ को फोन करने चली गई। सीमा भी उसके साथ गई। क्योंकि उसे बच्चे और रेवती की देखभाल के लिए किसी की ज़रूरत थी!
केशवराव स्नेहल के स्वभाव को अच्छी तरह जानते थे और उसे पसंद भी करते थे। स्नेहल ने अपने सास-ससुर का कभी अपमान नहीं किया। वह उनका सबसे पहले सम्मान करती थी! इसीलिए गंगाधरपंत और उनकी पत्नी काशीबाई दोनों ही स्नेहल को बेटी की तरह प्यार करते थे!
स्नेहल और काशीबाई बाहर आईं। अब स्नेहल ने उन्हें पूरी जानकारी दी। और जगह का प्रस्ताव रखा, और यह उसका अपना विचार था! तब काशीबाई गंभीर हो गईं। "क्या हुआ माँ? क्या आपको मेरा विचार पसंद नहीं आया?"
"नहीं, स्नेहल, तुम्हारा विचार बहुत अच्छा है। लेकिन एक बात ध्यान में रखना! मुझे नहीं पता कि तुम इन बातों पर कितना विश्वास करती हो, लेकिन मेरा अनुभव अलग है।"
जब तक हम उस इमारत, उस महल को नहीं देख लेते, तब तक हम कुछ नहीं कह सकते, और मुझे नहीं लगता कि वह लड़की, केशवा, अपनी

इमारत छोड़कर आपके घर आकर रहेगी!
लेकिन जब आप तीनों कहते हैं कि आपने इसे देखा है, तो मैं इसे झूठ या भ्रम नहीं कहूंगा! अपनी इच्छा पूरी करने के बाद, वह ऊर्जा के स्रोत पर वापस लौटने तक नहीं रुकेगी!
"आपका क्या मतलब है?"
"देखो, मुझे नहीं लगता कि इस विषय पर अभी चर्चा करने की ज़रूरत है! पहले हम अपना खाना खत्म कर लें, फिर खाना खत्म होने के बाद हम सीमा के पास चलेंगे! उसकी राय भी ले लेते हैं! कल सुबह सबसे पहले हम तुम्हारे घर चलेंगे!"
"आपके गुरुजी यहीं हैं! अगर उनके पास समय हो तो चलिए उन्हें ले चलते हैं! इस बीच आप मालिक से पता कर लीजिए, देखिए कौन इसे बेचना चाहता है! अगर हो सके तो कल तक काम पूरा कर लीजिए! मुझे लगता है अभी के लिए इतना काफी है!"
सभी ने उनकी सलाह मान ली। जल्दबाजी करने का कोई फायदा नहीं था। सब लोग अंदर आ गए। रेवती छोटे बच्चे की देखभाल में व्यस्त थी। कुछ देर बाद खाना बन गया। रेवती ने खाना खाया और सो गई। उसे किसी दवा की जरूरत नहीं थी। सभी लोग एक साथ बैठकर खाना खाने लगे।
खाना खाने और तरोताजा महसूस करने के बाद, काशीबाई ने इस विषय को उठाया।
"सीमा, तुम मुझे उस हवेली के बारे में क्या बता सकती हो?"
"तुम वहां गए थे, है ना?"
"चाची महल में नहीं हैं, लेकिन मैंने महल के आसपास का इलाका देखा है। पीछे की तरफ एक सीढ़ी है। ऊपर एक कमरा है! मुझे समझ नहीं आ रहा कि वह एक कमरा है या एक से अधिक!"

लेकिन जैसे ही हमने दरवाजा खोला, हमें उस लड़की की मौजूदगी का एहसास हुआ। और हमें वहां से जाना पड़ा। फिर भी, वह लड़की हमारे पीछे-पीछे घर तक आ गई!

काशीबाई को सीमाताई के बात करने का तरीका पसंद नहीं आया।

"सीमा, क्या मैं तुमसे कुछ कह सकती हूँ? गुस्सा मत करो! जिसे तुम छोटी बच्ची कह रही हो, वह एक मायावी आकृति है! उसके झांसे में मत आओ!"

वह कितनी शक्तिशाली है! यह समझना आसान नहीं है कि उसके पीछे कौन सी शक्ति छिपी है! ज़रा सोचिए, मृत लड़की आपके सामने जीवित प्रकट हो जाए! यह कितना भयानक है!

"यह तो दिन का समय है! हम यह नहीं बता सकते कि इससे कितना नुकसान होगा। बेवजह दहशत फैल जाएगी। किसी को कम या ज्यादा मिलेगा। और सारा दोष हम पर आ जाएगा!"

सीमाताई को अपराधबोध हुआ। वह सिर झुकाकर बैठ गई। काशीबाई उसकी स्थिति समझ गई। उसने धीरे से सीमाताई के सिर पर हाथ फेरा।

"सीमा, देखो, इसके लिए खुद को या रेवती को दोष मत दो। वह शक्ति फिर से जागृत हो गई है, इसलिए उसका तुम तक पहुंचना तय था! और वह पहुंच गई है!"

"बस इतना ही कि आपके वहां जाने से उसका रास्ता आसान हो गया या उसे दिशा मिल गई! और हमें यह कदम उठाने का समय मिल गया। इसे ही तो किस्मत कहते हैं!"

बातचीत करते-करते रात बीत गई। डॉक्टर अस्पताल के लिए निकल चुके थे। धीरे-धीरे सभी लोग सो गए।

➤➤➤➤➤➤

रेवती रात में अचानक जाग गई और रोने लगी।
सीमाताई डर गई। "रेवती, क्या हुआ?"
रेवती कुछ भी कहने को तैयार नहीं थी। वह लगातार रोती रही।
"बेबी, बताओ, क्या तुम्हें कहीं दर्द हो रहा है?"
"माँ, दादी माँ का निधन हो गया!"
सीमा को वास्तव में पता नहीं है कि वह क्या कह रही है।
"बच्चे, अच्छे से सो जाओ, रोना मत!"
"माँ, कुलकर्णी अजी अपने माता-पिता के घर गई हैं!"
"क्या?"
सीमाताई के लिए यह बहुत बड़ा झटका था। वह डर के मारे बाहर आ गई। बाहर हॉल में! केशवराव और गंगाधर पंत सो रहे थे। सीमाताई ने बत्ती जलाई। तभी वे सो गए।
"अरे रेवती, तुम क्या कह रही हो?"
"क्या?"
"आंटी भगवान के घर चली गईं!"
"कौन है भाई?"
"कुलकर्णी आंटी!"
"क्या?" केशवराव की नींद टूट गई।
" चल ! "
रेवती अभी भी रो रही थी।
"रेवती, बच्चे को क्या हुआ?"
"पिताजी, कुलकर्णी अजी अपने भगवान के घर चली गई हैं।"
"बेबी, तुम सपना देख रही होगी! किसी के बारे में इस तरह बुरा मत बोलो!"
"नहीं पिताजी, मैं सच कह रहा हूँ!"

"ठीक है, अब तुम सो जाओ! मैं देखता हूँ क्या करना है! रोना मत!"
सीमा की आँखों में आँसू भर आए। उसकी मौसी का चेहरा उसकी आँखों के सामने उभरने लगा। वह तुरंत वहाँ जाने के लिए दौड़ी। अपनी बेटी की जान बचाने के लिए! ..... उसे और कुछ नहीं सोचना चाहिए!
उसे अपनी चाची की कही बात याद आ गई। जान के बदले जान देना बुद्धिमानी नहीं है। लेकिन उसने तो यही किया था! जानबूझकर और अनजाने में! तो फिर हम अभी तक जीवित कैसे हैं? वह अचानक चौंक गया।
'हम रेवती की बातों को सच मान रहे हैं! शायद आंटी अभी भी जीवित हैं। जो भी होना है, वह शायद अभी होना बाकी है! या अगर हो रहा है, तो क्या हम उसे रोक सकते हैं?'
वह जल्दी से केशवराव के पास आई और अपनी राय व्यक्त की। सुबह के दो बज रहे थे। केशवराव ने अपने दूसरे पड़ोसियों, गुरुओं को बुलाया।
"दीपक, मैं तुम्हें परेशान कर रही हूँ! कुलकर्णी आंटी के पास जाओ और उन्हें बता दो कि मेरे पास तुम्हारा फोन नंबर है। कृपया उन्हें बता देना!"
"अरे चाचा जी, आप कहाँ हैं?"
मैं आपको बता दूंगा, लेकिन कृपया जल्दी जाइए, यह बहुत जरूरी है!
गुरव तुरंत आंटी के पास गया और दरवाजा खटखटाया। "आंटी?"
"मौसी?" कुछ देर बाद मौसी ने दरवाजा खोला।
"क्या? तुमने मुझे क्यों जगाया?"
"आंटी केशव अंकल का फोन चालू है!"
"क्या बोल रहा था?"
उन्होंने कुछ नहीं कहा! वे तुम्हें बताएंगे!
"ठीक है, चलिए चलते हैं!"
आंटी ने दरवाजा बंद किया और गुरव के घर चली गईं। "हेलो केशव, क्या

हुआ?"
अपनी चाची की आवाज सुनकर केशवराव का जीवन उथल-पुथल हो गया। सीमा ने उसके हाथ से फोन छीन लिया और रोने लगी।
"क्या हुआ, सीमे? क्या रेवती ठीक नहीं है?"
सीमा को समझ नहीं आ रहा था कि उसे कैसे बताए। लेकिन बताना ज़रूरी था। उसने डरते हुए कहा।
"आंटी, आपकी जान खतरे में है।"
चाची एक पल के लिए चुप रहीं!
"सीमा किसने कही?"
सीमा ताई ने डरते-डरते रेवती का वाक्य बोला।
सीमा, तुम्हारा क्या हाल है? वो तो बिल्कुल बच्ची है! तुम उसकी बातों को दिल पर कैसे ले सकती हो? मैं बिल्कुल ठीक हूँ! चैन से सोओ! मेरे बारे में चिंता मत करो! हैं? अब फोन नीचे रखो!
सीमा ने अपनी आँखें पोंछीं। केशवराव थोड़ा शांत हुआ। 'हे भगवान, आज रात अच्छी हो! आंटी को सुरक्षित रखना!' उन्होंने हाथ जोड़े। सब फिर से सो गए। आंटी गुरव के घर से चली गईं। दीपक ने पूछा,
"चाची, क्या हुआ?"
क्या आपके पास सुनने का समय है?
"आपका क्या हाल है, चाची? मुझे बताइए!"
जैसे ही चाची ने बोलना शुरू किया, गुरव ध्यान से सुनने लगा। दीपक गुरव, एक 24-25 साल का होशियार नौजवान! वह नौकरी के लिए उस गाँव आया था। सरकारी नौकरी!
मैंने इस चॉल में एक कमरा किराए पर लिया। जैसे ही मुझे फोन आया, मैं स्वभाव से खुले विचारों वाला था और सभी के साथ घुलमिल जाता था।
"ओह दीपक, कल..." आंटी ने सब कुछ बताया जो हुआ था।

"लेकिन चाची, यह कैसे संभव है?"
"अरे पापा, ये तो सच में हो गया! आप क्या सोच रहे हैं, नामुमकिन या मुमकिन?"
"तो चाची, आप आज यहीं क्यों नहीं सो जातीं? आप अपनी जान जोखिम में क्यों डाल रही हैं?"
"अरे दीपक, मौत तो देर-सवेर आ ही जाएगी! अब इस तरह जीने का क्या फायदा?"
"तुम सो जाओ! सुबह तुम्हारी ड्यूटी है ना? दरवाजा बंद कर दो! मैं जा रहा हूँ!"
आंटी धीरे-धीरे अपने घर की ओर चल पड़ीं। दीपक ने देखा कि वह उसके घर पहुँच गई हैं और उसने दरवाजा बंद कर लिया। उसने लाइट बंद की और सो गया।
आंटी दरवाजे तक पहुंचीं। उन्होंने दरवाजा धक्का देकर खोला। अंदर गईं, दरवाजा बंद कर लिया। और... उन्हें याद आया। उन्होंने दरवाजा बाहर से बंद कर दिया था और दीपक के घर चली गई थीं। और वहीं बैठ गई थीं। जब वे पहुंचे, तो उन्होंने दरवाजा खोलकर अंदर प्रवेश किया और उसे बंद कर दिया। फिर बाहर का दरवाजा किसने खोला? लेकिन अब बहुत देर हो चुकी थी। जो भी घर तक पहुंचना था, वह पहले ही पहुंच चुका था।
और अगर दरवाजा बंद होता तो भी वह अंदर आ सकता था। दरवाजे में एक छोटी सी दरार भी उस अमानवीय, क्रूर बल के लिए काफी थी। लेकिन दरवाजा खोलने का कारण अपनी उपस्थिति का एहसास कराना था! चाची को लगा कि यहाँ कोई और भी है!
आंटी डर गईं और पीछे मुड़ गईं। उन्होंने जल्दी से दरवाजा खोलने की कोशिश की! लेकिन खोल नहीं पाईं! हमारे पीछे जो है वह बहुत भयानक है, हम उसका सामना नहीं कर सकते! आंटी को पूरा यकीन हो गया था।

और अगले ही पल, मेरे कानों में एक आवाज आई।
"दादी!" आवाज जानी-पहचानी थी!
"रेवती?... वो यहाँ क्या कर रही है?"
"रेवती?" आंटी ने पीछे मुड़कर देखा। रेवती के पीछे जो कुछ उन्होंने देखा, वह अकल्पनीय था! यह बहुत भयानक था! उसे देखकर उनका सिर घूम गया। डर से उनकी आँखें सफेद पड़ गईं! उनके सामने खड़ी रेवती ने मुस्कुराते हुए कहा,
"दादी, मूर्ति...!" रेवती ने मूर्ति तो बना ली लेकिन... दादी का खेल खत्म! वह पीछे की ओर गिर पड़ी, और फिर कभी उठ नहीं पाई...! रेवती की दादी, चाली की मौसी, एक भोली-भाली शख्सियत, एक अमानवीय शक्ति के हाथों की कठपुतली बन गई थी!
आँखें खुली और हाथ रेवती की ओर बढ़ाए हुए, वह मानो स्तब्ध रह गया था। रेवती हमेशा के लिए एक मूर्ति बन गई थी! वह स्तब्ध रह गई थी! वह मौन हो गई थी!

➤➤➤➤➤➤

[८]

यहां सीमाताई और केशवराव की बेचैनी जारी थी! एक ओर, आंटी का जीवित होना खुशी की बात थी, और दूसरी ओर, ऐसा लग रहा था कि रेवती की बातें गलत नहीं होंगी! और अब हम किसी और के घर में हैं, इसलिए हम साथ बैठकर बात भी नहीं कर सकते!
हालांकि दोनों काफी देर तक सोए थे, लेकिन उनके मन में एक ही बात थी, कि रेवती को यहाँ रहने देना ठीक नहीं है, हमारा यहाँ रहना उचित नहीं है! सूरज उगते ही हमें यहाँ से निकल जाना चाहिए! और ऐसा ही हुआ! दोनों सुबह 5:30 बजे बिना कुछ बोले उठ गए!
हमारे अपने! गंगाधरपंत और काशीबाई जल्दी उठ गए! छोटी बच्ची होने

के कारण स्नेहल थोड़ी देर से उठती थी। क्योंकि वह रात में सत्रह बार जागती थी। बच्ची होने के कारण! इसीलिए उसे कोई नहीं जगाता था! रेवती सो रही थी।

"चाची, क्या हम जाकर उसे ले आएं? क्या आप रेवती पर ध्यान देंगी?"

"देखो सीमा, उसकी चिंता मत करो! और अगर स्नेहल जाग जाती, तो मैं तुम्हारे साथ आती! वह जल्द ही जाग जाएगी। अगर तुम तब तक इंतजार करना चाहो, तो हम साथ चल सकते हैं।"

"नहीं, आंटी, अगर हमें कुछ भी महसूस हुआ तो हम तुरंत जाकर आपको फोन करेंगे।"

"ठीक है, अगर तुम चाहो तो कर लो!" बात खत्म, दोनों जल्दी से निकल गए। स्कूटर अस्पताल में था, इसलिए वे रिक्शा से वहाँ गए। वहाँ से उन्होंने स्कूटर ले लिया, डॉक्टर को परेशान करने का कोई मतलब नहीं था। वे सीधे घर चले गए। चॉल में सन्नाटा था। दीपक जाने की तैयारी कर रहा था।

"अंकल, क्या आप यहाँ हैं? सुप्रभात?"

"अरे, कैसी हो चाची?"

"बहुत मजबूत!"

"तो फिर दरवाजा अभी भी बंद क्यों है? वे इतनी देर तक नहीं सोते, है ना?"

दीपक का मन संदेह से भर गया। वह तुरंत सीमा ताई और केशव राव के साथ अपनी मौसी के घर की ओर भागा! दरवाजा अंदर से बंद था। उसने दरवाजा खटखटाया, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। दीपक ने खिड़की खोली। अंदर देखते हुए उसने अपनी मौसी को पुकारा। और जैसे ही उन्होंने उसे देखा, उसने फिर से चिल्लाया।

"आंटी सस्सस ..."

सीमाताई और केशवराव देखते रहे। दिक्कत यह थी कि आंटी दरवाजे के पास ही गिर पड़ी थीं!
इसलिए दरवाजा खोलना संभव नहीं था। खिड़की से केवल उसके पैरों के तलवे ही दिखाई दे रहे थे। केवल एक ही विकल्प था। या तो खिड़की तोड़कर अंदर घुसना, या छत की टाइलें तोड़कर नीचे उतरना! 'पीछे का दरवाजा?' जब तक उसने सोचा, चॉल के बाकी पड़ोसी उसकी आवाज सुनकर इकट्ठा हो गए थे।
'क्या हुआ?'
पल भर में खबर फैल गई। कुछ लोग पीछे के दरवाजे की ओर भागे। दरवाजा मजबूत था, कुछ भी करना नामुमकिन था। दीपक ने बिना समय बर्बाद किए छत पर चढ़ गया। उसने दो-तीन बार फोन किया और नौकरों को संबोधित करते हुए कहा,
"क्या किसी के पास मोटी रस्सी है?"
दो-तीन लोग दौड़े और एक मोटी रस्सी ले आए। दीपक ने रस्सी को छत के नीचे लगे मोटे क्षैतिज तख्ते से बांध दिया। और रस्सी से लटकते हुए वह घर में उतर गया।
अपनी चाची का अवतार देखकर वह डर से कांप रहा था! सामने का दरवाजा खोलना नामुमकिन था। जब तक उसकी चाची का शव वहां से हटाया नहीं जाता, तब तक दरवाजा नहीं खोला जा सकता था!
दीपक ने झटपट पीछे का दरवाजा खोला। उसने पीछे के दरवाजे से अंदर जाने की कोशिश की। सीमाताई और केशवराव अंदर आए। चाची को देखकर सब चौंक गए।
आंटी की पहले से ही बड़ी-बड़ी आंखें डर से और भी बड़ी हो गई थीं! उनके हाथ-पैर लकड़ी की तरह अकड़ गए थे! उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था मानो वे सीधे हमारी तरफ देख रही हों!

चार-पाँच लोगों ने हिम्मत जुटाकर चाची के शरीर को दरवाजे से दूर रखा। सामने का दरवाजा खुला। सीमा ताई आगे बढ़ीं और साहसपूर्वक चाची की खुली आँखों को बंद कर दिया। फिर सभी ने हिम्मत जुटाई।
अन्यथा, कोई भी चाची की ओर देखने की हिम्मत नहीं करता। आठ बज चुके थे। केशवराव ने डॉक्टर के घर फोन किया और काशीबाई को सारी घटना बताई। वह भी स्तब्ध रह गईं।
"मौसी, रेवती को मत बताना, वरना वो घर पर कब्ज़ा कर लेगी!"
"केशवा, उसे बताने की कोई ज़रूरत नहीं है। वह पहले से ही उठकर बैठी है। चुपचाप, बिना कुछ कहे, उसने बस एक-दो बार कहा, 'मैं अपनी दादी के पास जाना चाहती हूँ!'"
केशवराव को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। तभी डॉक्टर घर में आ गया।
"क्या हुआ मां? केशव और भाभी कहां हैं?"
काशीबाई ने फोन अपने बेटे को दे दिया। केशवराव ने डॉक्टर को सब कुछ बताया और वह हैरान रह गया।
"केशवा, मैं यहीं हूँ। चिंता मत करो!"
"अरे, तुम क्यों आ रहे हो? तुम पूरी रात जागे रहे हो, आराम करो! हम देखेंगे क्या करना है!"
"हे केशवा, मैं यहाँ निगरानी करने के लिए नहीं हूँ! मैं तो सिर्फ़ आपातकालीन स्थितियों में ही जाता हूँ! अब जब स्नेहल बच्ची है, तो वो इधर-उधर क्यों सो रही थी? मैं भी तो बस वहीं सो रहा हूँ! आज रात मुझे नींद आ गई थी, मैं यहीं हूँ!" इतना कहकर डॉक्टर ने फ़ोन काट दिया।
"माँ, क्या आप मेरे तरोताज़ा होने तक चाय रख देंगी? नहीं तो स्नेहल को बता देना!"
"वह सो रही है, उसे सोने दो, मैं चाय बना देती हूँ, तुम फ्रेश हो जाओ!"

स्नेहल उसकी आवाज सुनकर जाग उठी। उसने घड़ी की ओर देखा।
'हे भगवान! मैं कितनी देर तक सोई! और बच्चा भी चैन से सो रहा है। हाँ, इसीलिए तो!'
उसे कुछ महसूस हुआ। वह झट से उठी और बाथरूम की ओर भागी। वहीं उसकी और माधव की टक्कर हो गई।
"क्षमा मांगना!"
"ओह, माफ़ कीजिए? क्या कोई इतनी देर तक सोता है?" डॉक्टर माधव ने अपना सिर सहलाते हुए कहा।
"इसीलिए तो मैंने माफी मांग ली!"
"और फिर इस टूटे हुए सिर का क्या करें?" स्नेहल ने झटपट चारों ओर देखा और माधव के होंठों को चूम लिया! माधव ने उसे कसकर गले लगा लिया!
"माधवा, चाय तैयार है!"
"हाँ माँ!" माधव ने स्नेहल को गले लगाते हुए कहा।
"अरे छोड़ो! मम्मी आती हैं!" और मम्मी आ गईं! देखते ही देखते, दोनों उत्साहित हो गए। स्नेहल बाथरूम की ओर भागी और माधव चाय लेने!...
जब स्नेहल पूरी तैयारी के साथ पहुंची तो घर का माहौल गंभीर था। इस समय माधव अपने बच्चे के पास होता, उससे खेल रहा होता या उसे जगा रहा होता! स्नेहल उस पर गुस्सा हो जाती। वह उन दोनों को चिढ़ाती! क्योंकि दोनों को नींद आ रही होती है! वे बस सोते रहते हैं! लेकिन आज ऐसा कुछ नहीं हुआ! माधव चुपचाप तैयारी कर रहा था। स्नेहल उसके पास गई।
"माधव, क्या हुआ? इतनी शांति क्यों है? क्या तुम अपने चाचा और चाची से नहीं मिल पा रहे हो?"
माधव ने उसे अपने पास बिठाया और सब कुछ बता दिया। वह अंदर-

बाहर से सदमे में थी। सुबह की घटना याद करके उसे खुद पर शर्म आ रही थी। वह किस मनोदशा में था और हमने कैसे...
" सॉरी माधव !"
"किस बारे मेँ?"
"ओह, माघा के साथ तुम्हारा मूड अलग था और मैंने तुम्हें बताया था..."
"कोई बात नहीं स्नेहल! तुम्हें कैसे पता चला? मुझे पता था, फिर भी मैं खुद को रोक नहीं पाया! जाने दो, भूल जाओ!" इतना कहकर माधव नहाने चला गया।
थोड़ी देर में डॉक्टर माधव, काशीबाई और रेवती चले गये।
"अरे रुको, मैं आ रहा हूँ!" गंगाधरपंत ने कहा।
नहीं। आप गुरुजी के पास जाइए। उन्हें यह बात बताइए और अगर समय हो तो उन्हें भी साथ ले जाइए!
"ठीक है, महोदया, जैसा आप आदेश दें!"
"अरे, ये सब क्या बकवास है? क्या तुम्हें समय का कोई अंदाजा भी नहीं है? हम निकल रहे हैं, तुम जल्दी आओ! स्नेहल आ रही है, अपना ख्याल रखना!"
"जी मां!" काशीबाई ने बच्चे का डायपर उठाया और चली गई।

➤➤➤➤➤➤

[९]

तीनों चॉल पहुँच गए। चॉल मातम में डूबी हुई थी। चॉल बड़ी थी और सबके घर भी बड़े-बड़े थे। एक भयानक सन्नाटा! दीपक फिर से ऊपर चढ़ गया था और उसने रस्सी छोड़ दी थी। और छतें अपनी जगह पर लगा दी गई थीं।
डॉक्टर माधव आगे आए और उन्होंने चाची की जांच की।
"क्या आपने पुलिस को सूचित कर दिया है?"

" हो ! "
तभी एम्बुलेंस और पुलिस मौके पर पहुंच गई! शव का पोस्टमार्टम किया गया और उसे ले जाया गया। गहन जांच के बाद पुलिस चली गई।
और बाकी नौकरानियाँ भी! चाची के पीछे कोई नहीं था, इसलिए किसी के रोने का तो सवाल ही नहीं था। दो-तीन औरतें सम्मान के प्रतीक के रूप में अपने चेहरे ढके बैठी थीं। और सीमा अकेली रो रही थी!
क्योंकि वह स्वयं को जिम्मेदार मान रही थी। काशीबाई उसके पास गई।
"सीमा, शांत हो जाओ! अपनी बेटी को देखो, वह सुबह से चुप है!"
सीमाताई ने अपने जीवन में पहली बार रेवती को गुस्से से देखा और बुदबुदाई,
"उसने अपनी चाची की हत्या कर दी, सात्वी मर गई! अगर वह उसी दिन मर जाती तो बेहतर होता!"
काशीबाई इसे सहन नहीं कर सकीं।
"तुम किस बारे में बात कर रहे हो?"
"नहीं तो क्या होगा? कौन जानता है कि मेली और कितनी जानें लेगी?"
सीमाताई की बातों से केशव राव स्तब्ध रह गया! लेकिन यह सच था! अगर उसकी बेटी की वजह से दूसरों की जान खतरे में पड़ सकती थी, तो वह ऐसा नहीं चाहता था! उसने तुरंत रेवती का हाथ पकड़ा और उसे बाहर खींचने लगा। डॉ. माधव चिल्लाया,
"केशवा, ये सब क्या बकवास है? अरे, वो तो बिल्कुल बच्ची है, किसी को कैसे मार सकती है? वो हमारे घर पर थी! और मान लो कि जिस भी माध्यम ने तुम्हारा या तुम्हारी भाभी का इस्तेमाल किया होता, क्या तुम खुद को सजा देते? क्या तुम अपनी भाभीयों को सजा देते?"
केशवराव के पास इस सवाल का कोई जवाब नहीं था! उन्होंने तुरंत रेवती का हाथ छोड़ दिया! उन्होंने इस तरह से हाथ छोड़ा कि हर कोई उनकी

मानसिकता समझ गया! अब उन्हें रेवती के जीने या मरने से कोई फर्क नहीं पड़ता था। वे बेहद हताश थे!
"केशव, अपना ख्याल रखना! अरे, ये तो बस शुरुआत है, आगे तो हमें पता ही नहीं चलेगा कि क्या होने वाला है! और अब रेवती की मौजूदगी या गैरमौजूदगी से कोई फर्क नहीं पड़ेगा! दोनों ननदें उस जगह जाने की जल्दी में थीं! अगर उनकी मंशा अच्छी भी थी, तो उन्हें क्या सजा मिलेगी?"
काशीबाई ने कहा
"माधवा, देखो, यह किसी पर दोष लगाने का समय नहीं है। शब्दों का प्रयोग मत करो! तुम्हारे पिता गुरुजी को लेने गए हैं, इसलिए तुम्हें उस महल के मालिक से पूछताछ करनी चाहिए। उसे नुकसान के बारे में बताओ। या तो तुम उस आधे-अधूरे महल को पूरी तरह से ध्वस्त कर दो, या हम कर देंगे!" काशीबाई अब थक चुकी थीं।
उन्हें यह उम्मीद नहीं थी कि दो दिनों में मामला इतना गंभीर हो जाएगा। एक खुशहाल परिवार मुसीबत में पड़ गया। और उसके साथ ही आसपास का इलाका भी! डॉ. माधव और केशवराव ने काम शुरू किया।
मैंने टेलीफोन डायरेक्टरी में गांव के चार-पांच प्रॉपर्टी डीलरों के नंबर ढूंढे। मैंने उन्हें फोन किया। मुझे एक डीलर से उस हवेली के बारे में जानकारी मिली। डॉ. माधव ने अपना परिचय दिया और हवेली के पास मिलने के लिए कहा। डीलर खुशी-खुशी मान गया। उसे इस जगह के बारे में कोई जानकारी नहीं थी।
डॉक्टर माधव ने एक अलग ही योजना बनाई। उन्होंने इंस्पेक्टर चापेकर को फोन किया और दावा किया कि इस हवेली में कोई छिपा हुआ है। उन्होंने मजाक में कहा कि रेवती उसे देखकर डर गई। उन्होंने रेवती की रिपोर्ट भी दिखाई।

क्या आपको पता है कि इंस्पेक्टर चाफेकर को रिपोर्ट के बारे में कितनी जानकारी थी? लेकिन वह इसे इतनी अच्छी तरह समझ गया था कि रेवती कुछ देखकर डर गई थी। उसने अंदाज़ा लगा लिया था कि क्या हो सकता है। उसने बस एक बात कही, मुझे सच बताओ। उसने सब कुछ बता दिया। मेरी चाची की मौत भी इसी वजह से हुई, बस! और अब यहाँ के लोगों की जान खतरे में है! बस!

"तो अब आपने क्या फैसला किया है?"

"इंस्पेक्टर साहब, मैंने उस हवेली के प्रॉपर्टी डीलर को फोन किया है। वह पता लगा लेंगे कि उस हवेली का मालिक कौन है। अगर वे हवेली को गिरा देते हैं, तो ठीक है, वरना हमें उसे गिराना पड़ेगा।"

उस जगह की सफाई करनी होगी। ताकि अगर वहां कोई नकारात्मक ऊर्जा हो तो वह नष्ट हो जाए, या कम से कम कम हो जाए। उसके बाद, अगर वहां कुछ भी अलग हो रहा है तो वह रुक जाएगा!

निरीक्षक को यह विषय जटिल लगा।

"देखिए, मैं अपने लिए जो भी संभव है, जो भी मेरी पहुँच में है, वह कर सकता हूँ। बाकी आप देख लीजिए। बाकी सब संपत्ति के मालिक पर निर्भर करता है, इसलिए इसे गिराना है या नहीं, बेचना है या नहीं, यह उनका अधिकार है।"

आप कई तरह की गुजारिशें कर सकते हैं, उसे अपनी मुश्किलों के बारे में बता सकते हैं और संभावनाओं के बारे में भी! लेकिन गलती से भी उसे यह मत बता देना कि आपमें से कोई एक इस स्थिति से गुजर चुका है! नहीं तो वो आप पर मुकदमा कर सकता है! मुझे चिंता हो रही है क्योंकि आप सब भले लोग हैं, बस इतना ही। ठीक है, चलिए, मैं जा रहा हूँ। पोस्टमार्टम होगा, देखते हैं रिपोर्ट क्या आती है!

"अगली कार्रवाई बाद में की जाएगी! क्योंकि यह स्वाभाविक मृत्यु नहीं

है। या तो यह दुर्घटना है, या फिर इसे जानबूझकर अंजाम दिया गया है! यह एक सोची-समझी साजिश है!"

➤➤➤➤➤➤

[१०]

तभी एक प्रॉपर्टी डीलर आया। उसने मालिक का विवरण मांगा। उसने कहा, "क्या आप मुझे बता सकते हैं?"

"इस जगह के अधिकार मेरे पास हैं। अगर आप व्यापार की बात करना चाहते हैं, तो आपको मुझसे बात करनी होगी।"

निरीक्षक ने पूछा, "आपका नाम क्या है?"

"मैं किरण हूँ, लोहार किरण!"

"लोहार, मुझे बस एक बात बताओ, क्या इस भूमि पर तुम्हारा अधिकार है या इस भूमि के प्रति तुम्हारी जिम्मेदारी है?"

लोहार असमंजस में पड़ गया, "क्या? मुझे समझ नहीं आया?"

"लोहार, इस भूमि पर आपका अधिकार है, मैं सहमत हूँ। तो इस भूमि पर जो कुछ भी होता है या नहीं होता है, क्या यह आपकी जिम्मेदारी है या मालिक की?"

लोहार को समझ नहीं आया कि क्या कहे, इसलिए उसने आत्मसमर्पण कर दिया।

"निरीक्षक महोदय, मुझे अपनी कानूनी भाषा में मत उलझाइए! मैं ये काम कुछ पैसे कमाने के लिए करता हूँ। क्या यहाँ कोई और व्यवसाय भी चल रहा है?"

"अरे, हमें कैसे पता चलेगा? अगर आपके पास जगह है, तो आपको सावधान रहना चाहिए! आपको सावधान रहना चाहिए! नहीं तो आप इसे जलाकर राख कर देंगे।"

"कोई तुम्हें ज़मीन के लिए पैसे देगा, इस जर्जर हवेली के लिए नहीं! सब

कुछ साफ़ करो, अपने नाम का एक बड़ा बोर्ड लगाओ! तुम्हें अधिकार है ना? लोग तुम्हारे पास आएंगे। क्या? क्या तुम सहमत हो?"
इंस्पेक्टर चफेकर की चतुराई सराहनीय थी। लोहार सपने का भरपूर आनंद ले रहा था। उसे अपने नाम के होर्डिंग दिखने लगे! यह तरकीब हमने क्यों नहीं अपनाई? इससे तो हमें दो पैसे ज़्यादा मिलते!
उसका चेहरा खुशी से चमक उठा।
"इंस्पेक्टर महोदय, मैं यह काम यथाशीघ्र शुरू कर दूंगा।"
"अरे! अभी तो नहीं, लेकिन आज ही! यह काम आज ही पूरा करना होगा। वैसे भी, यह कोई बहुत बड़ा काम नहीं है। इसका अधिकांश हिस्सा पहले ही ढह चुका है। आप तय कीजिए कि इसे कैसे करना है।"
"अगर आपको किसी भी तरह की मदद की जरूरत हो, तो मुझे बता देना। लेकिन सिर्फ तभी जब यह आज ही हो! अगर मैंने कल आपके खिलाफ शिकायतों पर कार्रवाई की, तो बात मत करना।"
लोहार उस जाल में नहीं फंसना चाहता था। अचानक उसकी नली में आग लग गई।
मुझे किसने फोन किया?
"मैं! मैं डॉ. माधव शास्त्री हूँ। मैं यह पद लेना चाहता था। लेकिन पूछताछ के बाद मुझे पता चला कि इसे न लेना ही बेहतर है! इसलिए मैंने योजना रद्द कर दी! क्षमा करें, मैंने आपको परेशान किया!"
"अरे नहीं महोदय! यह जगह अच्छी है! लोग तो कुछ भी कह देते हैं!"
"अरे, बोलना बंद करो! यहाँ एक बूढ़ी औरत रहती थी, उसी रात उसकी मौत हो गई! यहाँ आस-पास सभी भले लोग रहते हैं। लोग कहते हैं कि उस हवेली से कोई रात में यहाँ आया और उसे डरा-डरा कर मार डाला! इसके अलावा, वे कहते हैं कि रात में बहुत शोर-शराबा होता है।" डॉ. माधव बोलते रहे।

"जी सर, सब कुछ बता दीजिए। आप मुझे अपना बजट बताइए। मैं देख लूंगा कि इसे कैसे करना है!"
नहीं! मैंने अभी तक जगह का नाम भी नहीं रखा है। मैंने जगह की अच्छी तरह से जाँच कर ली है, वरना गड़बड़ हो जाएगी। अगर कल कुछ हो जाता है, तो कौन ज़िम्मेदार होगा?
"जी हां, आपने जगह का चुनाव किया था, हमें एक अंदाजा मिल गया है, अगर यह हमारे काम के लिए उपयुक्त लगेगा तो हम इस पर विचार करेंगे। अभी नहीं! चलिए चलते हैं!" इतना कहकर डॉक्टर जाने लगे।
"लेकिन मैं आपको उस जगह की पूरी जानकारी दे दूंगा, उससे आपको पता चल जाएगा! इसके लिए महल बनाने की क्या जरूरत है?"
"इसे मत तोड़ो! यह तुम्हारी मर्जी है! और यह मेरी मर्जी है कि मैं यह जगह लूं या नहीं! क्या मुझे इससे बेहतर जगह मिलेगी?" यह कहते हुए डॉक्टर जाने लगे।
"सर, बस एक मिनट रुकिए, मैं आज आपके लिए जगह खाली कर देता हूँ। अगर आप चाहें तो इसे अभी देख लीजिए। आपको समझ आ जाएगा!"
"नहीं, लोहार! मैं तुम्हारे दो पैसे के लिए अपनी जान क्यों जोखिम में डालूँ? मुझे जाने दो, मैंने इस जगह के विषय पर चर्चा न करने का फैसला किया है!"
"सर, एक काम कीजिए। मुझे एक-दो दिन का समय दीजिए। फिर जगह देखकर फैसला कर लीजिए। फिर बात पक्की हो जाएगी।"
"लेकिन आप इसे एक दिन में कैसे करेंगे? खैर, उस खर्च से मेरा कोई लेना-देना नहीं है, कल मुझे परेशान मत करना। मैं यह पद तभी स्वीकार करूंगा जब मुझे लगेगा कि यह सही है, और वह भी उचित कीमत पर!"
"सर, मैं तुरंत काम शुरू कर दूंगा। तो, क्या काम हो गया? इंस्पेक्टर

साहब, क्या यह काम करेगा?"
"जी हां, अगर मैं आपकी मदद कर सकूं तो मुझे बताएं।"
"जी हां!" इतना कहकर लोहार चला गया।
"इंस्पेक्टर साहब, धन्यवाद! आपके बिना यह संभव नहीं होता।"
"अरे, क्या बात है? ये तो मेरा काम है! ठीक है, मैं जा रहा हूँ।"
इंस्पेक्टर के जाने से केशव राव का तनाव आधा कम हो गया।
"धन्यवाद माधव!"
"ओह, पापा, ये तो आपका ही विचार था। मैंने क्या किया?"
तभी गंगाधर पंत वहाँ पहुँचे। उनके पास अपनी गाड़ी थी। वे अपने गुरुजी को भी साथ लाए थे। गुरुजी के हंसमुख स्वभाव को देखकर सभी को प्रोत्साहन मिला।
वह हाथ जोड़कर खड़ा था। गुरुजी की प्रेम भरी दृष्टि सब पर घूम रही थी। फिर वह चाली पर चढ़कर महल की ओर चल पड़ा। उसकी दृष्टि फिर से चाली पर टिक गई। उसके कदम सहज रूप से केशवराव के घर की ओर बढ़ गए।
"जो यहाँ रहता है?"
उन्होंने शांत स्वर में पूछा।
"हम यहीं रुकेंगे!" केशवराव आगे आए।
"तो फिर यह बंद क्यों है?"
"हम कल बाहर गए थे, पड़ोस वाली चाची के पास हमेशा चाबी होती थी! लेकिन कल रात उनका निधन हो गया। चाबी उन्हीं के पास थी। हम सुबह वापस आए। अब हमें चाबी ढूंढनी होगी, नहीं तो हमें ताला तोड़ना पड़ेगा।"
गुरुजी के कदम अपनी मौसी के घर की ओर मुड़ गए।
➢➢➢➢➢➢➢➢➢

[११]

सीमा घर में बैठी थी। गुरुजी को देखते ही वह उठ खड़ी हुई और उनके चरणों में सिर झुकाकर रोने लगी।

"गुरुजी, कृपया कुछ कीजिए! यह सब मेरी और मेरी बेटी की वजह से हुआ है!"

"उठो, बेटी! रो मत! बेटी, दुनिया ऐसी ही है! यह ऐसे ही चलती है! तुम क्या हो और मैं क्या? हम तो बस एक बहाना हैं। वही सब कुछ करता है! वही पूरी दुनिया का मालिक है! वही सब कुछ करता है! इसलिए खुद को दोष मत दो! अपनी बेटी का ख्याल रखो! वह कहाँ है?"

सीमाताई को सबसे पहले यह एहसास हुआ कि उन्होंने रेवती को बहुत दिनों से नहीं देखा है! उन्होंने सोचा कि वह अपने पिता के साथ बाहर गई होंगी। लेकिन गुरुजी, केशवराव, डॉ. माधव, गंगाधर पंत, काशीबाई और अन्य नौकरों के आने के बाद, केवल रेवती ही रह गईं! उनका दिल टूट गया!

"वह कब चली गई?"...।

खोज दोबारा शुरू हुई।

"रुको! वह आगे है! उस महल में! उस महल में...."

गुरुजी वहां गए। सब लोग उनके पीछे-पीछे चले! जब तक वे वहां पहुंचे, लोहार भी वहां पहुंच चुका था।

"क्या हुआ?" - लोहार

"मुझे उनकी बेटी नहीं मिल रही! वह शायद यहाँ आई होगी। गुरुजी कहते हैं कि वह अनजाने में इस महल में आई थी! उसे पता भी नहीं था!" एक ने कहा।

लोहार के पसीने छूट गए। "तुम्हारा क्या मतलब है?"

"बाला, इस इमारत से बुरी आत्माओं की गंध आ रही है! यह अशुभ है!

यह सिर्फ तुम्हारे लिए है! यह इमारत शापित है!"
"गुरुजी, कृपया इस संपत्ति के बारे में अफवाहें न फैलाएं! मैं आपकी बेटी को ढूंढ लूंगी। और मैं इस जगह के चारों ओर एक घेरा बना दूंगी! ताकि कोई भी यहां न आ सके, गलती से भी नहीं!"
"ओह, पिताजी, पहले उस लड़की को ढूंढो! उसकी जान खतरे में है!"
गुरुजी ने कहा और उस दिशा में चल पड़े। "तुममें से कोई भी मत आना! मैं देखूंगा!"
गुरुजी सीधे पीछे की ओर गए। उन्होंने सामने सीढ़ियाँ देखीं। वे सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर आ गए। दरवाजा खुल गया। रेवती खिड़की के नीचे सिर झुकाए बैठी थी।
"बच्चा...."
उसने अपना सिर उठाया और भयानक आवाज में बोली,
"तुम यहाँ क्यों आए हो? यहाँ से चले जाओ!"
गुरुजी रेवती के पास गए। उन्होंने रेवती के सिर पर हाथ फेरा और कुछ मंत्र पढ़े। रेवती ने सिर झुकाया। गुरुजी ने उसे प्यार से गोद में उठा लिया। जैसे ही उन्होंने उसे नीचे उतारा, लोहार दौड़ता हुआ आया।
"गुरुजी कहाँ थे?"
"ऊपरी कमरे में!"
रेवती बेहोश हो गई थी।
केशवराव आगे आए और रेवती को गुरुजी से ले लिया।
"गंगाधर, क्या तुम मेरी बात सुनोगे?"
"क्या, गुरुजी?"
"ओह, इस लड़की को सीधे अपने घर ले जाओ। इसे कुछ दिनों के लिए अपने पास रखो! इसकी जान खतरे में है! और इसी वजह से, इसे दूसरों के लिए माध्यम के रूप में इस्तेमाल किया जा रहा है! क्या तुम अपने घर

पर इसकी देखभाल कर सकते हो?"
"जी गुरुजी! यह परिवार कल रात मेरे साथ था! और कल रात उन्होंने मुझे बताया कि कुलकर्णी अजी अपने भगवान के घर चली गई हैं!"
"हां, लेकिन तब उनका इस्तेमाल माध्यम के रूप में नहीं किया गया था। वह अपनी मानसिक शक्तियों से बोल रही थीं! लेकिन अब स्थिति बदल गई है, आप खुद फैसला करें।"
नहीं तो मुझे उसे आश्रम ले जाना पड़ेगा। लेकिन यह बच्ची जो इतने लाड़-प्यार में पली-बढ़ी है, वहाँ का वातावरण तो अच्छा ही होगा!
"नहीं, नहीं, गुरुजी, मैं आपके वचन का उल्लंघन नहीं कर रहा हूँ! माधव, उसे ले जाओ, उसका इलाज करो और उसे घर ले आओ!"
"गंगाधर, अभी उसे सोने दो! मैंने मंत्र की शक्ति से उसे सुला दिया है। वह जितनी देर सोएगी, उतनी ही सुरक्षित रहेगी! चिंता मत करो! उसे कुछ नहीं हुआ है! लेकिन दूसरों की सुरक्षा के लिए यह आवश्यक था!"
केशव राव की आंखों में आंसू भर आए। 'यह बच्ची क्या-क्या सह रही है? और तुमने उसे फेंक दिया?'
माधवी ने कार निकाली।
"केशव, इसे ले जाओ और पीछे बैठ जाओ!"
"लेकिन...."
"अरे, बस... ज्यादा मत सोचो!"
केशवराव रेवती को गोद में लिए पीछे बैठे थे और कुछ देर में वे माधव के घर पहुँच गए। उन्होंने रेवती को घर में सुला दिया और स्नेहल को उस पर नज़र रखने के लिए कहा। फिर वे वापस यहीं लौट आए।
"मधवा, मुझे लगता है कि तुम्हें यहां समय बर्बाद नहीं करना चाहिए। अगर चाहो तो अस्पताल जाओ, वरना घर जाओ और आराम करो!"
"ठीक है, मैं अपने माता-पिता, अपने शिक्षक, अपनी भाभी से मिलूंगी

और चली जाऊंगी। ठीक है, क्या मुझे अपनी भाभी को लेने जाना चाहिए?"
"देखो, मैं पूछ रहा हूँ, क्या यह आ रहा है?"
"ओह, रेवती, अगर वह उठकर बैठ जाए, तो मैंने कहा था कि मेरी भाभी को वहां होना चाहिए।"
"मधवा, मुझे कुछ नहीं कहना। देखते हैं वो आती है या नहीं।"
डॉक्टर माधव सबसे मिले। सीमाताई को उनकी बातें सुननी पड़ीं। आंटी तो पहले ही जा चुकी थीं! वहाँ मौजूद लोगों के मन का ख्याल रखना ज़रूरी था। उन्होंने कोई विरोध नहीं किया। वह डॉक्टर माधव के साथ चली गईं।
केशव राव के घर की चाबी उसकी मौसी के घर में मिली। लेकिन उसमें अपना घर खोलने की न तो इच्छा थी और न ही हिम्मत!
“क्या हुआ केशव?” गुरुजी ने पूछा।
केशवराव ने पिछले दिन घटी घटना का ब्योरा दिया।
"केशव, दरवाजा खोलो! मैं हूँ!"
"मेरे पीछे कोई न आए। मैं अकेला ही अंदर जाऊंगा!" केशवराव ने ताला खोला और गुरुजी अंदर चले गए और दरवाजा बंद कर दिया।
➢➢➢➢➢➢➢➢➢

[१२]

गंगाधर पंत ने केशवरावण को शांत किया। "केशवरावन, वह व्यक्ति सामान्य नहीं है! चिंता मत करो!
कुछ देर बाद गुरुजी ने दरवाजा खोला। वे प्रसन्न मन से बाहर आए और बोले, "अंदर आ जाओ! अब यह घर सुरक्षित है!"
केशवराव प्रसन्न हुए और उन्होंने गुरुजी के चरण छुए।
लोहार ने यहाँ लोगों को काम पर लगाया था। काम आधुनिक सामग्रियों

का उपयोग करके शुरू किया गया था।
"केशव, जाओ और उन लोगों को बता दो कि वे सावधान रहें और पहले सीढ़ियों का ऊपरी हिस्सा तोड़ दें। सावधान रहो! कुछ भी हो सकता है!"
केशवराव वहां गया और उन्हें कुछ निर्देश दिए। लोहार को समझ नहीं आया कि इन लोगों के साथ क्या हुआ था।
लेकिन उसे डॉक्टर को वह जगह दिखानी ही थी और इतने सारे लोगों की मौजूदगी में उसका काम आसान हो जाता। उसने अपने काम में ज़रा भी लापरवाही नहीं की। जब तक उसने युद्ध स्तर पर किले को ध्वस्त किया, तब तक शाम हो चुकी थी।
अब गिरी हुई लकड़ी के ढेर को उठाने और लकड़ी को हटाने का काम शुरू होने वाला था। रात बीतती गई। बहुत सारा काम हो चुका था। अचानक ही लोहार ने काम बंद कर दिया।
चलो, बाकी कल देखते हैं!
सभी लोग हैरान थे कि गुरुजी इतनी देर तक यहाँ क्यों रुके रहे? गंगाधर पंत तो उनके रुकने के कारण हिल भी नहीं पा रहे थे। और काशीबाई भी! भला वो पूछ ही कैसे सकते थे? क्योंकि गुरुजी बिना किसी कारण के यहाँ नहीं रुकते।
"गंगाधर, यह महल उतना भव्य नहीं है जितना तुम सोचते हो!"
"आपका क्या मतलब है?"
"अरे, इस किले के अंदर एक तहखाना है! वो क्रूर शक्ति उस तहखाने से ही किले तक पहुँची है। शायद ये तहखाना ही हो! वो क्रूर शक्तियाँ अभी तक जागी नहीं हैं क्योंकि मैं यहाँ था! अगर वे जाग गईं, तो कौन जाने कितने शिकार होंगे!"
"गुरुजी, थोड़ा आराम कीजिए। आपने भी आज सुबह कुछ नहीं खाया! मुझे लगता है सबको कुछ खा लेना चाहिए, चलिए मेरे घर चलते हैं!"

"नहीं गंगाधर! तुम्हें अंदाज़ा भी नहीं है! आज रात बहुत लंबी होने वाली है! मुझे आज ही तहखाने में जाना है! अगर कुछ कर सकती हूँ, तो आज ही करूँ! कल बहुत देर हो जाएगी!"
"लेकिन गुरुजी, हम तहखाने में कैसे जाएंगे? हमें ठीक-ठीक कैसे पता चलेगा कि वह कहाँ है?"
"अरे, जब तक तुम वहां नहीं जाओगे, तुम्हें कैसे पता चलेगा?"
गुरुजी ने रहस्यमय लहजे में बात की।
"उस डीलर को फोन करो!"
केशवराव व्यापारी को बुलाने गए, वह आ गया। गुरुजी ने उन्हें सब कुछ समझाया। उन्हें बहुत पसीना आ रहा था। उन्हें विश्वास नहीं हो रहा था! लेकिन अगर वे विश्वास नहीं करते, तो उनकी मृत्यु हो जाती! उनके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं था। उन्होंने एक साहसिक निर्णय लिया।
"गुरुजी, क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ?"
"हां, मुझे कोई समस्या नहीं है। लेकिन क्या आपने कभी इन चीजों का सामना किया है?"
नहीं, गुरुजी, लेकिन चलिए देखते हैं कि मामला क्या है? क्या वाकई कोई खाली जगह का फायदा उठा रहा है? तहखाने के बारे में तो सवाल बना हुआ है, उसके मालिकों ने मुझे इसके बारे में कुछ नहीं बताया है। फिर भी, अगर आप ऐसा कहते हैं, तो चलिए पता कर लेते हैं! शायद उन्हें भी पता न हो!
"ठीक है, तो तुम जाओ, कुछ खाना ले आओ और वापस आ जाओ! मैं यहीं रहूंगा, बस ज्यादा देर मत करना।"
"ठीक है, गुरुजी।" लोहार चला गया।
"गुरुजी, आप भी दो निवाले खा लीजिए। खाना तैयार है!"
चॉल के बड़े हॉल में सब लोग इकट्ठा हो गए। दो-तीन गृहिणियों ने

मिलकर खाना बनाया था। खाना सादा था, लेकिन स्वादिष्ट था। देखते ही देखते सब खत्म हो गया।
जिन लोगों को कुछ जानकारी थी, वे भोजन पर ध्यान नहीं दे रहे थे। शाम को चाची का शव बरामद हुआ। उनका अंतिम संस्कार किया गया।
मृत्यु का कारण अत्यधिक भय के कारण दिल का दौरा था। सीमा जल्दी में आई और चली गई। कोई नहीं बता सकता था कि रेवती वहाँ क्या करेगी। गुरुजी भी नहीं!
इसका एक ही उपाय था। रेवती को यथासंभव लंबे समय तक सुलाए रखना। कम से कम तब तक जब तक उन क्रूर ताकतों का नाश न हो जाए!
लोहार बहुत तेज़ी से चला गया। वह गुरुजी के भोजन समाप्त होने से पहले ही पहुँच गया। गुरुजी और सभी ने उसकी सराहना की। गुरुजी पहले अकेले आगे बढ़े। वे महल के प्रांगण में चले गए।
और वह ज़मीन पर बैठ गया। उसने कुछ देर के लिए अपनी आँखें बंद कर लीं और मंत्रों का जाप किया। इधर-उधर लोहार घूम रहा था। उसे नहीं पता था कि यह व्यक्ति वास्तव में क्या कर रहा है। इसमें कितना सच था और कितना कल्पना?
काफी समय बीत गया। बाकी चालकारी ऊब गए और चले गए। केवल केशवराव, गंगाधरपंत, काशीबाई और लोहार ही पीछे रह गए।
देखते ही देखते शोरगुल चारों ओर फैल गया। गुरुजी ने लोहार की ओर इशारा किया। उन्होंने उसे पास बुलाया और धीमी आवाज़ में कुछ समझाया। उन्होंने इस बात का ध्यान रखा कि बाकी लोग न सुन सकें। गुरुजी ने केशव को पास बुलाया।
"केशव, तुम सब अब जाओ, कोई भी यहाँ न रुके। अपने घर जाओ और हमारे लौटने का इंतज़ार करो।" "लेकिन गुरुजी?"

"केशवा, समय बर्बाद मत करो। चले जाओ!"
वे तीनों बेबस थे। तीनों गए और लोहार के किले के सुनसान हिस्से में प्रवेश कर गए।
किले का मध्य भाग खुला था। चारों ओर जो कुछ भी जमा था, वह बिखरा पड़ा था। यह लोहार के विश्वास की परीक्षा थी। गुरुजी ने उसे एक वस्तु दी थी। वह वस्तु दिशा सूचक की तरह काम कर रही थी।
और उस वस्तु ने अपना काम कर दिया। वह अचानक चमक उठी और एक निश्चित स्थान पर चली गई। बस कुछ क्षणों के लिए! और फिर रोशनी गायब हो गई।
लोहार के तैयार होते ही उसने झट से झुककर जगह को चिह्नित कर दिया। तब तक गुरुजी वहाँ पहुँच चुके थे। लोहार ने फावड़ा उठाया और खोदना शुरू कर दिया। गुरुजी ने उसे रोक दिया।
"अरे रुको, तुम तो गंदगी फैला दोगे। मुझे इस जगह को हाथ से साफ करना पड़ेगा।"
"ठीक है गुरुजी, मुझे रहने दीजिए!"
लेकिन गुरुजी नहीं रुके। लोहार ने भी कोई आपत्ति नहीं जताई। दोनों ने मिलकर पूरी जगह साफ कर दी।
"गुरुजी? यह कैसी जगह है?" लोहार उस जगह को देखकर आश्चर्यचकित रह गया।
"अरे, ये तो पागलपन है, हम आपको वहाँ नहीं जाने देना चाहते। दो मिनट रुकिए!"
गुरुजी ने अपना हाथ बढ़ाया। किसी चीज को दबाया गया और सीटी की आवाज के साथ नीचे एक बड़ी दरार खुल गई।
"चलो, जल्दी चलो। मेरे पीछे आओ। समय कम है! रेवती अब तक जाग गई होगी, उसे यहाँ नहीं आना चाहिए था। वरना, बहुत बड़ी दुर्घटना हो

जाती!"
गुरुजी और लोहार तहखाने में उतरने लगे। उनके पीछे दरवाजा चरमराहट के साथ बंद हो गया। लोहार डर गया।
"गुरुजी? अब मुझे क्या करना चाहिए? मैं बाहर कैसे जाऊँगा?"
➢➢➢➢➢ ➢➢➢

[१३

तभी तहखाने का दरवाजा खुला और रेवती ने अपनी आँखें खोलीं। लेकिन वो नज़र? वो तो रेवती की नज़र नहीं थी! जो भी था, वो बेहद गुस्से से भरा था! रेवती उठ बैठी। वो और सीमा एक कमरे में सो रही थीं। स्नेहल और बच्चा दूसरे कमरे में थे! ये सुनकर सीमा भी उठ बैठी।
"रेवती, बेटा, क्या तुम जाग रही हो? क्या तुम कुछ खा रही हो?"
उसने मुस्कुराते हुए पूछा। लेकिन वह उसकी पत्नी नहीं थी। वह उठी, दरवाजा खोला और बाहर चली गई। दरवाजा ज़ोर से बंद हो गया। यह इतनी जल्दी हुआ कि सीमा को पता भी नहीं चला। देखते ही देखते दरवाजा बंद हो गया। वह झल्लाते हुए उठी और दरवाजा खटखटाने लगी। तभी उन्हें स्नेहल की चीख सुनाई दी। और बच्चे के रोने की आवाज भी। वे बहुत डर गए। उन्हें लगा कि कुछ बुरा होने वाला है, इसलिए वे रोने लगे और रेवती और स्नेहल को पुकारने लगे।
कुछ देर बाद स्नेहल ने दरवाजा खोला। रोती हुई लड़की अंदर आई थी।
"मौसी, कृपया मेरे बच्चे को बचा लीजिए!"
"स्नेहल? क्या हुआ?"
"आंटी, रेवती बच्चे को ले गई है।"
"क्या जहां?"
मुझे नहीं पता, लेकिन वह बच्चे को लेकर बाहर चली गई।
स्नेहल फूट-फूटकर रो रही थी।

"तो फिर तुमने उसे क्यों नहीं रोका?"
"आप चाची को कैसे रोक सकते हैं?"
"अरे, वो तो बिल्कुल बच्ची है! क्या तुम उसे रोक नहीं सकते थे?"
"आंटी, वह रेवती नहीं थी, वह बिल्कुल भी रेवती जैसी नहीं लग रही थी। उसने एक हाथ से मुझे धक्का दिया और बच्चे को उठाकर चली गई!"
"स्नेहल, रोना मत, धैर्य रखो। हम कुछ करेंगे... तुम भाऊजी को फोन करो।"
स्नेहल ने अपनी आँखें पोंछीं और फोन के पास गई। उसने नंबर डायल किया... 'हेलो माधव?...'
"अरे... स्नेहल... क्या हुआ?"
"माधव... रेवती अपने बच्चे को ले गई!"
माधव की आवाज सुनते ही स्नेहल का सारा तनाव टूट गया।
"क्या? तुम किस बारे में बात कर रहे हो?"
स्नेहल द्वारा सब कुछ बताए जाने पर माधव को दर्द का एक झटका लगा।
"रुको, मैं यहीं हूँ। रोना मत!"
"भाभी कहाँ है?"
"हाँ, ऐसा ही है ना? रेवती ने उन्हें बेडरूम में बंद कर दिया और अपने कमरे में आकर बच्चे को ले गई!" माधव का दिल बैठ गया।
'लेकिन वह कहाँ गई?'
"अब माधव को क्या करना चाहिए?"
मैं निकल रहा हूँ! मैं पाँच मिनट में पहुँच जाऊँगा।

➤➤➤➤➤➤➤➤➤

[१४]

केशवराव के घर में सब लोग असमंजस में थे। गुरुजी और लोहार को गए काफी समय हो गया था। गंगाधर पंत बेचैनी से इधर-उधर घूम रहे थे।

"केशवा, बहुत समय हो गया! इन दोनों को असल में क्या हो रहा है, इसके बारे में क्या पता है?"
"चाचा जी, मुझे लगता है वे किसी मुसीबत में हैं! क्या हमें जाकर देखना चाहिए?"
" ठीक ए ! चल ! "
लेकिन चाची ने आपत्ति जताई।
"अरे, तुम्हें कुछ समझ आया या नहीं? क्या तुम गुरुजी पर अविश्वास दिखा रहे हो? क्या उन्होंने तुम्हें नहीं बताया? मेरे आने तक इंतजार करो?"
"यह ठीक है, लेकिन फिर उन्हें पता ही नहीं चलेगा कि आगे क्या होने वाला है! और मैं उन पर अविश्वास नहीं कर रहा हूँ, मैं उनके बारे में चिंतित हूँ, इसलिए हम जा रहे हैं। चलो, केशवा! ..."
"अरे, लेकिन...." काशीबाई आगे कुछ नहीं कह सकीं क्योंकि उन्हें भी चिंता होने लगी थी। क्या पता गुरुजी को किसी मदद की ज़रूरत पड़ जाए?
"मैं भी आ रहा हूं!"
"अरे, क्या तुम पागल हो गए हो? गुरुजी और लोहार वापस आ गए हैं? क्या वे अपने सामने किसी को नहीं देखना चाहते? या उन्हें अकेले रहने से डर लगता है?"
"अरे, इसमें इतना डरावना क्या है? जाओ, आगे बढ़ो!"
गंगाधर पंत और केशव राव महल की ओर चल पड़े!
"दरवाजा लॉक करें!"
" हो ! "
काशीबाई ने दरवाजा बंद किया और घर में पलंग पर बैठ गईं। उनकी नजर घड़ी पर पड़ी। बारह बज चुके थे। काशीबाई की धड़कन तेज हो गई! अकेलेपन का एहसास अचानक और भी तीव्र हो गया। उन्हें लगा कि उन्हें

जल्दी से दरवाजा खोलकर बाहर जाना चाहिए!
"लेकिन गुरुजी ने तो कहा था कि यह घर सुरक्षित है? तो फिर हमें इतनी बेचैनी क्यों हो रही है?"
किसी के पीछे होने का एहसास बेहद डरावना था! उसने पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत नहीं की। उसका पूरा शरीर कांपने लगा।
"डर गया क्या?"
आवाज जानी-पहचानी थी लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा था कि यह किसकी आवाज थी।
"मैं भी डरी हुई थी, लेकिन उसने मुझे भी नहीं छोड़ा! अब उसने मुझे तुम्हारी मूर्ति बनाने के लिए भेजा है!"
" रेवती ? "
वह तेजी से मुड़ गया।
आवाज से बिल्कुल अलग एक आकृति पीछे खड़ी थी! वह कैसी आकृति थी? वह किसी आकृति जैसी लग रही थी! जो बिल्कुल पास खड़ी थी। क्या वह खड़ी थी, या तैर रही थी? या किसी अवस्था में थी?
खुले बाल! बड़ी-बड़ी आंखें और नौ फुट लंबे पैर!
काशीबाई को याद नहीं आ रहा था कि उसने इस महिला को पहले कहाँ देखा था। लेकिन उसने अनुमान लगाया और उसके पैरों तले ज़मीन खिसक गई।
"कुलकर्णी आंटी?"
'लेकिन चलो भी...' काशीबाई आगे कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं कर पाईं।
रेवती की आवाज सुनाई दी। "मूर्ति...!"
और... कुछ ही क्षणों में, काशीबाई का शरीर अपनी जगह पर जम गया।
'नहीं! मैं ऐसा नहीं होने दूँगा! गुरुजी ने कहा था कि यह घर सुरक्षित है!'

लेकिन यह महज़ एक ख्याल था। उसने अपने शरीर पर से नियंत्रण खो दिया था। उसका शरीर अब अकड़ने लगा था! उसके साथ ऐसा क्यों हो रहा है? वह हिल क्यों नहीं पा रहा? तो रेवती की बात सच थी? उसे ऐसा महसूस हुआ...

आवाज फिर आई। "दादी... मूर्ति!"

उसके सामने जो भी आकृति थी, वह हर पल एक अलग रूप धारण कर रही थी। कभी रेवती, कभी कुलकर्णी काकू, और कभी गुरुजी...

काशीबाई स्तब्ध रह गईं।

'गुरुजी? क्या इसका मतलब गुरुजी भी है...?' उन्हें इससे आगे नहीं सोचना चाहिए!

तो तुम सब इतने लंबे समय तक किसके साथ घूम रहे थे? वे कौन थे? लोहार किसके साथ गया था और ये दोनों अब कौन हैं? तो क्या तुम तीनों की जान खतरे में है?

"नहीं, मैं ऐसा नहीं होने दूंगा!" उसने बोलने की कोशिश की, लेकिन उसके मुंह से एक भी शब्द नहीं निकला।

"क्या करेंगे आप?"

पूरे वातावरण में हंसी की एक जोरदार गूंज सुनाई दी। काशीबाई उस हंसी को सहन नहीं कर सकीं! उनके कान खड़े हो गए।

उसके दिल पर दबाव बढ़ गया। उसकी धड़कन तेज़ होने लगी। उसी क्षण, दरवाजे पर दस्तक हुई। यह दस्तक काशीबाई के लिए काफी थी! वह गिर पड़ी।

दरवाजे पर दस्तक हुई। हंसी की आवाज पूरी चॉल में गूंज उठी। और पल भर में सन्नाटा छा गया! नौकर हंसी की आवाज सुनकर इकट्ठा हो गए थे! वे दरवाजा खटखटा रहे थे!

"क्या हुआ, केशव?"

लेकिन केशव घर में दरवाजा खोलने के लिए मौजूद नहीं था! काशीबाई घर में ही थी और दरवाजा खोलने के लिए दरवाजे के पीछे चली गई थी। लेकिन पीछे कोई और था! उसने दरवाजा खोल दिया।
"केशवा? क्या हुआ?" नौकरों ने केशव को अपने सामने देखकर पूछा।
"इतनी जोर से कौन हंस रहा था?"
उसके सामने खड़ा केशव कांप रहा था।
"ओह कुलकर्णी आंटी... कुलकर्णी आंटी आ गई थीं..."
"क्या...?"
"हाँ, सही कहा... अपने अवतार को देखने के बाद उनकी मृत्यु हो गई। पता नहीं मैं कैसे ज़िंदा हूँ? आप बिल्कुल सही समय पर आ गए! शायद इसीलिए। मैं जाकर माधव को बुलाता हूँ। आप यहीं रुकिए!"
"अरे, लेकिन..." केशव ने आगे की बात सुनने के लिए रुकना ही छोड़ दिया।
➤➤➤➤➤

माधव ने गाड़ी स्टार्ट की और बिजली की रफ्तार से घर की ओर चल पड़ा। चूंकि रात का समय था, इसलिए सड़क खाली थी। उसका ध्यान आगे की ओर था! कुछ दूरी पर उसने किसी को चलते देखा। कोई छोटी बच्ची... अरे, ये तो रेवती है...!
डॉक्टर ने रेवती के पास गाड़ी रोक दी। रेवती के पास बच्चे को देखकर माधव को अत्यंत प्रसन्नता हुई। लेकिन बच्चा इतना शांत कैसे हो सकता है? माधव को यह बात समझ नहीं आई। पर अब सोचने का समय नहीं था।
"रेवती? कहाँ जा रही हो, जान? चलो, घर चलते हैं!"
रेवती ने एक पल के लिए डॉक्टर माधव की ओर देखा। वह नज़र रेवती

की नहीं थी। रेवती कार में बैठ गई। माधव ने कार चलाई। उसे कुछ अजीब सा महसूस हुआ।
रेवती और बच्चा, दोनों उसे घूर रहे थे। माधव को समझ नहीं आ रहा था? वे उसे इस तरह क्यों देख रहे थे? हमारा बच्चा तो अभी मुश्किल से छह महीने का था! फिर उसकी निगाहें इतनी अलग क्यों लग रही थीं?
"चाचा जी, दादी जी का निधन हो गया!"
रेवती ने बेजान भाव से कहा। उसने उसकी ओर देखे बिना ही बोलना शुरू कर दिया।
"हां बेटा, जो हुआ वो बुरा था! तुम्हारी कुलकर्णी दादी अच्छी थीं।"
"नहीं, मैं बच्चे की दादी के बारे में बात कर रहा हूँ।"
"क्या?...आपका मतलब क्या है?..." डॉ. माधव चौंक गए। उन्होंने अचानक ब्रेक लगाया।
"हाँ! बच्चे की दादी भी चली गई!"
"रेवती, तुम क्या बात कर रही हो?" डॉ. कडाडले ने पूछा।
“दादी चली गईं... बच्चे की दादी चली गईं...” रेवती बोलती रही। “मैं बच्चे को लेकर वहाँ जा रही थी। मैंने कहा था कि मैं दादी से आखिरी बार मिलूंगी! लेकिन मैं कैसे जा सकती थी? और अब बहुत देर हो चुकी है! बच्चे से मिलने से पहले ही दादी चली गईं!”
" रेवती .... "
डॉ. खड़कन ने रेवती को मुस्कुरा कर मारा।
"अगर मैं तुम्हें मार दूं तो क्या होगा? तुम मर जाओगे और तुम्हारे पिता भी मर जाएंगे!"
माधव रेवती की बातें बर्दाश्त नहीं कर सका। उसने गाड़ी घर की ओर चलाई। रेवती बोलती रही... चॉल में जो हुआ था और आगे क्या होगा, इस बारे में, लेकिन माधव को कितना पता था? कौन जाने वह कितना

ध्यान दे रहा था?
कुछ ही क्षणों में, कार दरवाजे पर रुक गई। स्नेहल और सीमा दरवाजे पर खड़ी उसका इंतजार कर रही थीं।
" अरे माधव ...."
जैसे ही स्नेहल कुछ कहने वाली थी, उसका ध्यान रेवती की ओर गया जो कार से बाहर निकल रही थी। और फिर बच्चे की ओर...
"ओह...." वह आगे दौड़ी और रेवती से बच्चे को छीन लिया। लेकिन उसे कुछ अलग सा महसूस हुआ।
यह बच्चा उसका था, पर उसे ऐसा महसूस नहीं हो रहा था। उसकी चुप्पी उसे असहनीय लग रही थी। वह उसे बार-बार चूम रही थी। लेकिन उसे ऐसा महसूस नहीं हो रहा था कि वह बच्चे को, अपने बच्चे को चूम रही है। ज़ाहिर है, अब उसे वह बच्चा नहीं चाहिए था!
माधव भारी कदमों से कार से बाहर निकला।
"जीजाजी? क्या हुआ?" सीमा ने पूछा।
"भाभी...माँ का निधन हो गया...!"
"तुम्हारा क्या मतलब है?" सीमाताई ने स्नेहल से पूछा।
"आपका क्या मतलब है?"
"स्नेहल, माँ अपने भगवान के घर चली गई हैं!"
"तुमसे किसने कहा?"
"वो..." माधव ने रेवती की ओर इशारा किया।
तभी सीमा को चक्कर आने लगे।
"भाभी...डॉ. माधव ने आगे आकर उनका समर्थन किया।"
"भाभी, अपना ख्याल रखना...."
इसीलिए माधव ने सीमाताई का समर्थन किया।
स्नेहल यह बर्दाश्त नहीं कर सकी। उसने गुस्से से डॉक्टर माधव और

सीमा की ओर देखा। वह बच्ची को लेकर घर के अंदर चली गई और गुस्से में पैर पटकने लगी। डॉक्टर माधव यह समझ गए। वे उसके पीछे गए और स्नेहल को पुकारते हुए घर के अंदर चले गए।
"स्नेहल, अगर कुछ हो गया तो? तुम मुझे ठीक से बताना।"
"मैं क्या कहूँ?" स्नेहल ने गुस्से से कहा, "तुम्हें किस बात की चिंता है? इन लोगों के बारे में कौन जानता है? इनकी वजह से हमें और कितना तनाव झेलना पड़ेगा? इनके झंझटों की वजह से हमारा पूरा परिवार असुरक्षित हो गया है! तुम्हें समझ क्यों नहीं आता? मुझे नहीं पता वहाँ माँ की क्या हालत है। आज हमारा बच्चा मुसीबत में है और तुम उसका साथ दे रही हो।"
"स्नेहल..." माधव ने स्नेहल की ओर हाथ बढ़ाया।
"तुम किस बारे में बात कर रहे हो? क्या तुम्हें पता भी है?"
स्नेहल ने माधव की आँखों में देखते हुए कहा। उसकी आँखों में आँसू भर आए। "मैं समझ गई! मैं सब कुछ समझ गई!"
और वह गुस्से से रोते हुए बेडरूम में चली गई और दरवाजा जोर से बंद कर दिया। माधव लगातार दरवाजे पर दस्तक देता रहा।
"स्नेहल, सुनो, क्या यह सच है...?"
उसकी बातें सीमाताई के कानों तक पहुँच रही थीं। स्नेहल ने जो कहा था, वह अक्षरशः सच था। अगर कोई उसकी जगह होता, तो वह भी यही सोचता। हमारी और हमारी बेटी की वजह से दूसरों पर विपत्ति आ रही है। दो जानें पलक झपकते ही चली गईं। हमें इसका ख्याल रखना होगा। या तो हम इसका ख्याल रखें, वरना हम खुद को और रेवती को मार डालेंगे। इसी दृढ़ निश्चय के साथ सीमाताई ने रेवती का हाथ पकड़कर उसे खींचना शुरू किया।
"चलो, यहाँ से निकल जाओ! तुम खुद को कुर्बान करना चाहते हो, है ना?

मेरी और मेरी बेटी की कुर्बानी ले लो। मैं तैयार हूँ।"
सीमाताई रेवती को लेकर वहां से चली गई। माधव सीमाताई को लेकर चिंतित था। जब वह बाहर आया तो दोनों वहां कहीं नहीं मिलीं।
"अरे? ये दोनों कहाँ गए?" माधव ने सोचा। माधव को पता नहीं था। क्या उसे इन दोनों को ढूंढना चाहिए या स्नेहल को समझाना चाहिए? वह जल्दी से घर के अंदर चला गया।
"स्नेहल! तुम्हारी मूर्खता की वजह से तुम्हारी भाभी रेवती को ले गई। दोनों की जान खतरे में है। खासकर तुम्हारी भाभी की!"
तुम्हारी वजह से वो रेवती के साथ अकेली रह गई। अरे, भगवान ने तुम्हें दिमाग दिया है, कभी-कभी तो उसका इस्तेमाल करो! पता नहीं वहाँ माँ का क्या हुआ। मैं वहाँ जा रही हूँ! तुम बस अपने बच्चे के साथ वहीं बैठकर रोती रहो!
इतना कहकर माधव ने कार की चाबी ली और चला गया। उसने दरवाज़ा ज़ोर से खोला। कार स्टार्ट की और तेज़ रफ़्तार से निकल पड़ा। शायद उसे पता नहीं था कि कहाँ जाना है। क्या उसे पहले अपनी माँ से मिलना चाहिए या अपनी साली सीमा से?...

➢➢➢➢➢➢➢

**[१६]**

दरवाजा जोर से बंद होते ही स्नेहल को होश आ गया।
'मैंने क्या किया? मैं इतनी स्वार्थी बिल्कुल नहीं हूँ! तो फिर मैंने ऐसा क्यों किया? बच्चे की वजह से? बच्चा - हमारा बच्चा!'
बच्चे को देखते ही वह चौंक गई। बच्चा उसे घूर रहा था। और उसके पीछे एक धुंधली आकृति हवा में तैर रही थी।
अंधेरा! धूसर! मुझे ठीक से पता नहीं था कि यह क्या था? लेकिन कुछ तो था जो भयानक था। यह डरावना था।

स्नेहल की हिम्मत नहीं हुई कि वह बच्चे को छुए। बच्चे की निगाहें स्नेहल पर टिकी हुई थीं। उसके चेहरे पर एक अजीब सी मुस्कान थी! और वह स्नेहल की ओर रेंगने लगा। जैसे ही स्नेहल पालने पर आगे-पीछे हिलने लगी, बच्चे ने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

वह हाथ धीरे-धीरे स्नेहल की ओर बढ़ने लगा। स्नेहल को खतरे का आभास हुआ। स्नेहल समझ गई कि वह हाथ उसकी ओर आ रहा है।

तभी उस धूसर आकृति से एक आवाज आई, "आंटी की मूर्ति...!"

और स्नेहल को गहरा सदमा लगा! जब उसने पहली बार यह सब सुना था, तो उसे यह बचकाना लगा था। यह झूठा लगा था। लेकिन अब वह इसकी सच्चाई का अनुभव कर रही थी।

हालांकि वह भाग जाना चाहती थी, वहां से चली जाना चाहती थी, लेकिन वह अपने हाथ-पैर भी नहीं हिला पा रही थी।

बच्चे का हाथ आगे बढ़ता रहा, बच्चा आगे आता रहा, और फिर शब्द!

"क्या तुम मेरा किला छीन लोगे? क्या तुम मेरी जगह ले लोगे? अगर मैं तुम्हारी जगह ले लूँ तो क्या होगा?"

स्नेहल को इसका अर्थ समझ नहीं आया। लेकिन उसे महसूस हुआ कि उसके शरीर में कुछ अजीब बदलाव हो रहे हैं। उसकी यादें धीरे-धीरे मिटती जा रही थीं। वह अपनी पहचान भूल गई थी। कम से कम कुछ हद तक। उसकी चेतना क्षीण होती जा रही थी।

और एक नई स्नेहल का जन्म हुआ। बेशक, वह स्नेहल नहीं थी! वह तो बस स्नेहल का शरीर था!

मेरे कानों में ये शब्द सुनाई दिए, "समाप्त!"

स्नेहल आलस से उठी। मानो कुछ हुआ ही न हो। उसने बच्चे को गोद में उठाया। उसे अपनी छाती से लगाया और जैसे ही उसकी नज़र उस घर पर पड़ी, दो अमानवीय शक्तियाँ हरकत में आ गईं।

➢➢➢➢➢➢➢

[ १७ ]

जैसे ही गुरुजी और लोहार तहखाने में उतरे, दरवाजा चरमराहट की आवाज के साथ बंद हो गया।

"गुरुजी, अब हमें क्या करना चाहिए? हम बाहर कैसे जाएंगे?" गुरुजी की आँखों में एक अजीब सी चमक दिखाई दी।

"क्या आप इस हवेली के मालिक हैं? तो आपको नहीं पता कि यहाँ क्या है?"

लोहार को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। उसके हाथ में मशाल अंधेरे में इधर-उधर हिल रही थी। ज़रूर कोई तहखाना रहा होगा। सालों से बंद पड़ा हुआ। पुरानी चीज़ों से भरा हुआ! बदबू असहनीय थी। लोहार ने अपनी पैंट की जेब से एक रुमाल निकाला और उसे अपनी नाक पर लगाया।

"मालिक? क्या आपको इसकी गंध नहीं आ रही?"

"नहीं! मुझे इस गंध की आदत हो गई है।"

"तुम्हारा क्या मतलब है?" लोहार ने पूछा।

"कुछ नहीं। चलो। यहाँ एक बड़ा बक्सा है जिस पर एक बड़ा ताला लगा है। इसे खोलो!"

लोहार को समझ नहीं आ रहा था कि आखिर हो क्या रहा है? उसे कैसे पता चला कि यहाँ एक बक्सा है और वह ताला कैसे खोलेगा? उसे चाबी की ज़रूरत थी।

"यह चाबी ले लो।"

"चाबी? और वो तुम्हारे पास है? तो तुम मेरी अनुमति के बिना पहले यहाँ आ गए?"

"आपकी अनुमति? लोहार, मुझे बताओ, इस किले का स्वामित्व आपको

किसने दिया?"
"यह तुम्हें किसने दिया? मालिक ने?" लोहार ने अपनी नाक पकड़ते हुए अजीब सी आवाज में कहा।
“मालिक? लेकिन मैं ही मालिक हूँ!” गुरुजी ने कहा। “और अपने जीवनकाल में मैंने यह अधिकार कभी किसी को नहीं दिया! मेरी बेटी बीमार पड़ गई। फिर एक दुर्घटना में मेरी मृत्यु हो गई। मेरी पत्नी अकेली रह गई। उसे जले हुए स्थान पर मेरी बेटी पार्वती दिखाई देने लगी। बेशक, वह पार्वती नहीं थी।”
"तुम्हारा क्या मतलब है?" लोहार को समझ नहीं आया।
"इससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है। इसे छोड़ दो! मेरी पत्नी की मृत्यु के बाद महल जर्जर हो गया था। और तुम पहरा दे रहे थे! तुमने साजिश रची और एक दिन इसे ताला लगाकर खुद आज़ाद हो गए! लेकिन मूर्ख! ताला लगाने से तुम मालिक नहीं बन जाते। यह जगह अभी भी मेरी है!"
लोहार ने गुरुजी के शब्दों का अलग अर्थ निकाला।
"तो क्या? आप एक मृत गुरुजी हैं और फिर भी किसी और का स्थान लेने का दावा करते हैं? क्या, गुरुजी? क्या यह उचित है?"
"मूर्ख, मैं गुरुजी नहीं हूँ। मैं भैरवनाथ हूँ! इस महल का स्वामी!"
आवाज और रूप में आए बदलाव को देखकर लोहार को बहुत पसीना आने लगा। उसने अपना हाथ नाक पर रखा। उसे दबाव महसूस होने लगा। उसे अपनी जान का डर सताने लगा। उसकी आवाज कर्कश हो गई।
"यह जगह मेरी है! क्या तुम मेरी जगह लोगे? अगर मैं तुम्हारी जगह ले लूँ तो क्या होगा?"
लोहार की सांसें रुकने लगीं। वह गिर पड़ा। उसकी हृदय गति तेज हो गई। धड़कन तेज होती गई, और धीरे-धीरे रुक गई!

गुरुजी ने अपना हाथ बढ़ाया। बस इसी क्षण, लोहार के शरीर से आत्मा गुरुजी के शरीर में प्रवेश कर गई।
"तुम मेरे तहखाने में आकर मेरे महल पर कब्ज़ा करने वाले हो! ठीक है! तो यहीं सड़ो!"
गुरुजी आगे बढ़े। उन्होंने चाबी से ताला खोला। उसमें से कुछ निकाला। ताला बंद कर दिया। लोहार के हाथ से मशाल छीन ली और उसकी लाश पर तिरस्कार भरी नज़र डालते हुए उसे लात मार दी।
"अरे कमीने, तुम यहीं हो!"
यह कहते हुए वे अंधेरे में मशालें जलाते हुए आगे बढ़े!

➢➢➢➢➢➢➢➢➢

{ १८ }

यहां केशवराव और गंगाधर पंत घर से बाहर निकले। बुलबुलों की चहचाहट और पत्तों की सरसराहट के अलावा, चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। इन दोनों के कदमों की आहट के अलावा कोई और आवाज नहीं थी।
"चाचा?"
"क्या हाल है, केशवा?"
"क्या आपको यह चुप्पी अजीब नहीं लगती?"
"तुम्हें ऐसा इसलिए लग रहा होगा क्योंकि तुम्हें हमेशा अस्त-व्यस्त रहने की आदत है! और अभी तो रात का समय है!"
"चाचा जी, मेरा मतलब वो नहीं था! चाची जी का आज सुबह निधन हो गया! उनका भयानक चेहरा अभी भी मेरी आँखों के सामने है! तो नौकर इतनी जल्दी कैसे भूल गए?"
मुख्यतः दीपक? दीपक गुरव, जो आंटी के घर आया था और उसने दरवाजा खोला था। उसे तो जागना चाहिए था। उसका दरवाजा बंद है।

"तो आपका क्या विचार है? क्या हमें पहले उससे मिलना चाहिए?"
"नहीं! हमें पहले गुरुजी को ढूंढना होगा!"
"ठीक है, अब जब यह बात आपके दिमाग में आ ही गई है, तो आकर देख लीजिए।"
केशवराव ने एक पल भी बर्बाद किए बिना दीपक के घर की ओर दौड़ लगाई। लेकिन घर बाहर से बंद था। वह बेबस था। वह वापस लौट आया।
"चाचा जी, ये तो बहुत बढ़िया है। दीपक घर पर नहीं है। वो मुझे बिना बताए कहाँ चला गया?"
"अरे, क्या उसे तुम्हें कुछ बताना ही होगा? वो कहाँ चला गया होगा? चलो बताओ!"
लेकिन केशव राव किसी बात को लेकर चिंतित थे। वे दीपक को लेकर चिंतित थे।
वे दोनों महल के स्थल पर पहुँचे। मलबे से बचते हुए वे केंद्र तक पहुँचे। लेकिन वहाँ कुछ भी नहीं था। कोई भी नहीं था।
"केशवा, यहाँ कोई नहीं है। इसका मतलब है कि वे तहखाने में गए होंगे!"
"तहखाने में? लेकिन मुझे यहाँ कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा है। मुझे समझ नहीं आ रहा है। अब हमें क्या करना चाहिए?"
गंगाधर पंत चारों ओर देखने लगे। उन्होंने अँधेरे में टकटकी लगाकर देखा! उन्हें कुछ तो ज़रूर दिखा होगा। वे गौर से देखने लगे।
"केशवा, मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैंने गुरुजी के दर्शन कर लिए हों।"
"क्या जहां?"
"क्या उस तरफ कोई झाड़ी नहीं है? वह सड़क कहाँ जाती है?"
केशवराव असमंजस में था।
"चाचा जी, रेवती उस तरफ मिली थी। वह वहां डरी हुई थी। और हमारी चॉल जाने वाली सड़क उसी झाड़ी से होकर गुजरती है।"

"क्या इसका मतलब यह है कि गुरुजी घर जा रहे हैं? वे अकेले हैं। तो फिर लोहार कहाँ है?"
"चाचा जी, अगर उसका काम पूरा हो गया होता तो वह घर चला गया होता। चलिए चलते हैं।"
"गुरुजी, हे गुरुजी..."
केशवराव गुरुजी को पुकारने लगे, लेकिन गुरुजी नहीं रुके।
"चाचा जी, चलिए, हमारी आवाज उन तक नहीं पहुंच रही है।"
"केशव..., क्या तुम्हें समझ आ रहा है कि तुम क्या कह रहे हो? अरे, यहाँ तो इतनी भयानक खामोशी है कि सुई गिरने पर भी आवाज सुनाई देगी। और तुम कह रहे हो कि आवाज नहीं पहुँच रही? नहीं, केशव, ये किसी तरह गौड़ बंगाल है। एक बात तो ये है कि ये गुरुजी नहीं हैं! गुरुजी हमसे दूर नहीं भागेंगे!"
और अगर वे इससे बच रहे हैं तो?
केशव राव ने संदेह व्यक्त किया। गंगाधर पंत के पास इसका कोई जवाब नहीं था।
"अरे गुरूजी..."
"हमें अब इंतजार करना होगा, वे हमें जाने नहीं देंगे।"
जो कुछ भी हो रहा था, जो भी व्यक्ति मौजूद था, सब रुक गया!
"तुम क्या कर रहे हो? क्यों चिल्ला रहे हो?" उसने अपनी नाराजगी व्यक्त की।
"और तुम दोनों यहाँ क्या कर रहे हो? उसे अकेला छोड़कर? उसकी जान खतरे में डाल रहे हो?"
उनकी शंकाओं को सुनकर तारे चमक उठे।
"गुरुजी, क्या आपने मुझे नहीं बताया था कि अब घर सुरक्षित है?"
"अरे, भला कोई अकेला क्यों रहना चाहेगा? तुम तो मूर्ख हो!"

"मालिक, लोहार कहाँ गया?"
"क्या आपको पता है कलामदल कहाँ गया? वह उसी समय वहाँ से चला गया और फिर कभी वापस नहीं आया।"
गंगाधर पंत को गुरुजी की इस नाराजगी की उम्मीद नहीं थी। उनका गुरुजी से पुराना रिश्ता था। गुरुजी का शांत स्वभाव सर्वविदित था। और वे प्रसिद्ध भी थे। संकट कितना भी बड़ा क्यों न हो, गुरुजी विचलित नहीं होते थे।
"गुरुजी, क्या हुआ? क्या आप किसी परेशानी में हैं?"
"तुम मेरी परेशानी कैसे समझ सकते हो? क्या तुम इसके लायक भी हो? तुमने अपनी पत्नी को इस मुसीबत में अकेला छोड़ दिया! काश, तुममें हिम्मत होती, तो तुम अकेले ही मुझे ढूंढने आते। वरना, तुम उसे अपने साथ लाते। अगर बिली अब मर गई तो तुम क्या करोगे?"
"गुरुजी..."
गंगाधर पंत क्रोधित हो गए।
"क्या आप कुछ सोच रहे हैं? क्या आप कुछ कह रहे हैं? नहीं, मुझे यकीन है। आप हमारे गुरुजी नहीं हैं! मुझे बताइए, आप कौन हैं?" गंगाधर पंत अब जोर से बोल रहे थे।
यही तो दूसरे व्यक्ति को उम्मीद रही होगी। उसने उन दोनों की तरफ देखा। और तभी आसमान में एक ज़ोरदार ठहाका गूंज उठा। जो गुरुजी के व्यक्तित्व के अनुरूप नहीं था!
भयानक! बहुत भयानक!
दोनों कांप रहे थे। इस सन्नाटे से भी बदतर क्या था? वह सन्नाटा जो हमें कंपकंपा रहा था?
केशवराव ने गंगाधर पंत का हाथ पकड़ते हुए कहा, "चाचा जी, यह तो बहुत भयानक है! ये गुरुजी नहीं हैं। हम उनके रास्ते पर आ गए हैं।"

केशवराव ने फुसफुसाते हुए कहा, "अब हम क्या करें? आंटी वहाँ अकेली हैं। वो कहती हैं कि वो मुसीबत में हैं! चलो, घर चलते हैं।"
"अरे, लेकिन ये कौन है? क्या आप जानना नहीं चाहते? और गुरुजी कहाँ हैं?"
"मैं कौन हूँ? अरे, मैं भैरवनाथ हूँ! इस स्थान का स्वामी!"
फिर से जोरदार हंसी,
"तुम्हारे गुरुजी का अंत हो गया। मेरा भी अंत हो गया। तुम्हारी पत्नी भी चली गई और तुम्हारी बहू भी! अब तुम्हारा बेटा बचा है! देखो तुम उसे कैसे बचाते हो।" फिर से ज़ोरदार ठहाका।
"तुम मेरी जगह लेने वाले हो, है ना? तो पहले कीमत का हिसाब लगा लो!"
गंगाधर पंत का गुस्सा भड़क उठा। वह अपने सामने खड़े व्यक्ति पर झपटे। पल भर में ही वह व्यक्ति दूर जा गिरा।
"फिर कभी ऐसी मूर्खतापूर्ण हरकत मत करना! मैंने तुम्हारे शिक्षक का काम तमाम कर दिया है! तुम क्या लायक हो? मैं तुम्हारा भी काम तमाम कर सकता था! लेकिन मुझे कोई जल्दी नहीं है!"
"इससे भी ज़्यादा ज़रूरी काम है! लेकिन याद रखना, अगर तुमने मुंह खोला तो मुझे तुम्हें खत्म करने में एक मिनट भी नहीं लगेगा। चलो अब चलते हैं।"
गंगाधर पंत क्रोध से कांप रहे थे, और केशव राव भय से कांप रहे थे!
"चाचा जी, चलिए..." केशवराव ने उसे खींचते हुए कहा।
" काका चला ...."
"नहीं, केशवा, मैं उसे नहीं छोड़ूंगी! मुझे यह समझना ही होगा कि उसने मेरे गुरुजी के साथ क्या किया!"
"चाचा जी, इस समय आंटी की जान बचाना ज्यादा जरूरी है। वो खतरे में

हैं! और स्नेहल की जान भी खतरे में है!"
"अरे मूर्ख, क्या तुम्हें मेरी बात समझ नहीं आई? उसकी पत्नी मर चुकी है और उसकी बहू भी मर चुकी है! उसका बेटा भी मौत की ओर बढ़ रहा है, सोचो तुम उसे कैसे बचाओगे!"
गंगाधर पंत का निधन हो गया है।
"लेकिन मुझे एक बात समझ नहीं आ रही, आप हमें क्यों मार रहे हैं? मैं तो आपको जानता भी नहीं! क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ?"
गंगाधर पंत के प्रश्न से केशव राव स्तब्ध रह गये।
"चाचा जी, ये क्या हो रहा है? इसने आत्महत्या कर ली है और आप इसकी मदद कैसे कर रहे हैं? यह कहता है कि इसने आंटी और स्नेहल को मार डाला है! चलिए देखते हैं क्या हुआ?"
नहीं, केशवा, तुम जाओ! अगर उसकी बात सच है, तो मैं बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगी। लेकिन मरने से पहले मुझे यह जानने का हक है कि उसने हमें क्यों मारा! तुम जाओ, केशवा! मेरी चिंता मत करो! जाओ, जल्दी निकल जाओ!
"नहीं, चाचाजी! मैं आपको छोड़कर नहीं जाऊंगी।"
"केशवा, बेवकूफी मत करो। अगर काशी ज़िंदा है, तो वो वहाँ अकेली है। उसे साथ की ज़्यादा ज़रूरत है। और अगर कुछ भी हो जाए, तो माधव और स्नेहल को बता देना।"
"और मैं उन्हें क्या बताऊं? मैंने अपने चाचा को अकेला छोड़ दिया क्योंकि मेरी मां के साथ ऐसा हुआ था।"
"केशव, क्या तुम्हें उन्हें यह नहीं बताना चाहिए कि उनकी जान खतरे में है? अरे, हम तो बच गए! लेकिन उन्हें अभी भी जीना है! तुम यह कैसे नहीं समझ सकते? जल्दी जाओ! मैं तुम्हारे पीछे आ रहा हूँ!"
केशवराव के पास कोई विकल्प नहीं था, और सोचने का समय भी नहीं

था। उन्हें यह भी नहीं पता था कि वे कितने दिन जीवित रहेंगे। सीमाताई और रेवती के बारे में कोई खबर नहीं थी।
लेकिन उन्होंने अपने भाषण में उसका ज़िक्र नहीं किया, इसका मतलब था कि वह अभी भी ज़िंदा थी! यह ज़रूर उसकी स्वार्थपरता होगी!
केशव राव की स्थिति और भी बदतर हो गई। क्या उसे खुश होना चाहिए या दुखी? उसे समझ नहीं आ रहा था। उसने सुनने का फैसला किया।
"ठीक है चाचा जी, मैं जाऊँगा! लेकिन आप लोग ज्यादा दखल मत देना!"
यह कहकर केशव वहां से चला गया। एक ओर तो वह अपने परिवार के बच जाने से खुश था, वहीं दूसरी ओर माधव के परिवार के संकट में होने से दुखी भी था।
उन्होंने हर हाल में उसे बचाने का फैसला किया, चाहे इसके लिए उन्हें अपनी जान ही क्यों न देनी पड़े! लेकिन उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या करें। कम से कम अभी तो नहीं!
कुछ देर में वे चॉल पहुँच गए। वहाँ का माहौल देखकर वे दंग रह गए! इसका मतलब था कि भैरवनाथ ने सचमुच कुछ किया था। उन्हें देखते ही चॉलवासी उनके चारों ओर जमा हो गए।
"क्यों? कितनी देर हो गई? क्या तुम किसी को फोन करने गए थे या किसी को बुलाने?" केशवराव को पता नहीं था।
"आपका क्या मतलब है?"
"अरे, तुम्हारा मतलब क्या है? तुम डॉक्टर माधव को फोन करने गए थे, है ना? तो क्या तुम गए थे?"
"नहीं!"
" का? "
"इसका मतलब है कि अभी नहीं!"
"तो अब तुम इस चाची को अकेले ही दफनाओगे?"

"क्या?"
"अरे, ये क्या? तुम बेहोश होने का नाटक क्यों कर रहे हो? शास्त्री आंटी का देहांत हो गया है! तो उनका अंतिम संस्कार कौन करेगा? क्या उनका बेटा करेगा? या तुम करोगे?"
"एक मिनट रुको! देखो, स्थिति तो सचमुच बेकाबू हो गई है! मामला उतना सरल नहीं है जितना तुम सोच रहे हो। कौन जाने यह दीपक कहाँ चला गया?"
केशव राव को अचानक कुछ याद आ गया।
"क्या किसी ने दीपक को देखा है? मैंने उसे शाम से नहीं देखा है।"
"नहीं, नहीं! कुलकर्णी आंटी के अंतिम संस्कार के बाद से उन्हें देखा ही नहीं गया है!"
" कमाल ए ? "
केशव राव के मन में संदेह की लहर दौड़ गई।
"उसके साथ कुछ बुरा हुआ है, है ना?" उसने ऐसे कहा जैसे वह खुद से बात कर रहा हो। किसी को समझ नहीं आया।
" अं ? "
"नहीं, कुछ नहीं! नाडकर्णी काका, मैं आपको नंबर दे देता हूँ। क्या आप माधव को फोन कर सकते हैं?"
मना करने का तो सवाल ही नहीं था। नाडकर्णी ने नंबर लिया और फोन करने चले गए। और केशवराव ने भी हिम्मत जुटाकर उनके घर आने का फैसला किया!
काशीबाई का शरीर चालक्रियों से ढका हुआ था। दो-तीन महिलाएं शरीर के पास बैठी थीं। केशवराव ने शरीर को प्रणाम किया।
“केशवा,” जोशिकाकु ने कहा, “अरे, सीमा को भी बुलाओ। वो कहाँ है?”
तभी नाडकर्णी दौड़ता हुआ आया।

"केशवा...कुछ तो बहुत गलत हो रहा है!"
"क्या हुआ, चाचाजी?"
"यहाँ आओ?"
केशवराव उनके साथ चले गए। नाडकर्णी ने धीरे से उन्हें कुछ बताया। देखते ही देखते, केशवराव पाँचों सीटों पर बैठ गए!
➢➢➢➢➢➢➢

**[१९]**

माधव का घर छोड़ने के बाद, सीमाताई रेवती को अपने साथ लेकर चली गई।
"चलो, मेरी और मेरी बेटी की बलि दे दो! मैं तैयार हूँ!"
"ओह हां हां!" रेवती के मुंह से एक अलग ही आवाज निकली।
"तुम्हें मरने की इतनी जल्दी क्यों है? तुम्हें बहुत जल्दी होगी, स्त्री! उस दिन भी तो तुम हमारे महल में आने की इतनी जल्दी में थी! अरे, तुम बिना बुलाए किसी के घर नहीं जाती, और मेरे महल में बिना सोचे-समझे घुस आई?"
मेरी बेटी ने क्या किया था? उसने एक मूर्ति बनाई थी, है ना? आपकी बेटी? तो फिर इतना हंगामा करने की क्या ज़रूरत थी? अगर वह ज़िंदा होती, तो क्या वह मर नहीं जाती? लेकिन नहीं!
"कल की लड़कियों, तुम तो सांस भी नहीं ले सकती! सब कुछ बहुत जल्दी में है! हमारे ज़माने में तो औरत जैसी कोई चीज़ ही नहीं थी! अगर उसकी मर्ज़ी होती, तो तुम उसके पति का चेहरा देख लेती!"
"लेकिन तुम कौन हो? तुम क्या चाहते हो?" सीमाताई ने रोते हुए स्वर में कहा।
"मैं कौन हूँ? क्या आप मुझे पहचान नहीं पा रहे? मैं वही हूँ जिसके बारे में कुलकर्णी चाची ने मुझे बताया था! यशोदा और यह मेरी बेटी पार्वती है..."

अचानक, वहाँ एक धूसर आकृति प्रकट हुई! एक छोटी बच्ची जैसी! सीमा बेहद डर गई। वह वहीं जम गई।
"आंटी, डरिए मत! मैं आपको कुछ नहीं करूँगी। लेकिन मैं रेवती को लेने आई हूँ! मेरे पास खेलने के लिए कोई नहीं है! आपने महल तोड़ दिया है। तो अब हम कहाँ रहें? इसलिए हम स्नेहल आंटी के साथ रहने आए हैं! क्या मैं उन्हें अपने साथ ले जाऊँ? उनके साथ खेलने के लिए?"
लहजा ठंडा था लेकिन डराने वाला था! आवाज में आत्मविश्वास झलक रहा था!
"नहीं! मैं किसी भी कीमत पर रेवती नहीं छोड़ूंगा!"
"तब आपकी ओर से क्या किया जाएगा?"
उसके सामने खड़ी धूसर आकृति मुस्कुराते हुए बोलने लगी। इसका जवाब श्रीमती सीमा के हाथ में नहीं था।
"तुम कुछ नहीं कर पाओगे।" "तुमने ही हमारे किले को नष्ट करवाया है!" रेवती ने कहा।
"तुम्हारे पास सिर्फ एक ही विकल्प है! या तो हमारा महल हमें वापस कर दो, या फिर अपनी चॉल हमें दे दो! तब तक यह लड़की हमारी हिरासत में रहेगी! एक बात याद रखना, तुम्हारे पति की जान खतरे में है! तुमने ही यह स्थिति पैदा की है।"
आपको इससे निकलने का रास्ता ढूंढना होगा! आपने उसे स्नेहल के घर पर रखा था, है ना? तो अब से वह वहीं रहेगी! बहुत आराम से! लेकिन शर्त मत भूलना! वरना आप में से कोई भी ज़िंदा नहीं बचेगा! जाओ, अब समय बर्बाद मत करो। जाओ, निकल जाओ!
यह सुनकर रेवती शांत हो गई और स्नेहल के घर की ओर चल पड़ी। सीमाताई उसकी पीठ को देखती रही, मानो सदमे में हो! वह भी दृढ़ निश्चय के साथ घर की ओर चल पड़ी!

एक उपाय था, रेवती कम से कम कुछ दिनों के लिए सुरक्षित रहेगी।

➢➢➢➢➢➢

[२०]

डॉक्टर माधव गाड़ी लेकर चले गए; थोड़ी ठंडी हवा लगने पर उन्हें सुकून मिला। गुस्सा करने का कोई फायदा नहीं था। जो भी करना हो, शांत मन से करना चाहिए।

मुझे क्या करना चाहिए? मुझे कहाँ जाना चाहिए?

क्या मुझे चॉल जाना चाहिए या सीमा की बहनों को ढूंढना चाहिए? क्या मेरी माँ के साथ सच में कुछ हुआ है?

माधव की भावनाएं उथल-पुथल में थीं। वह खुद पर बहुत गुस्सा था। उसकी माँ की मृत्यु वहीं हुई थी और वह अपनी पत्नी और बच्चों के साथ यहाँ फंसा हुआ है! "तुम्हें शर्म आनी चाहिए!"

अपराधबोध की भावना इतनी प्रबल थी कि वे टूट गए।

"माँ...माँ, मैं यहाँ हूँ!"

और गाड़ी रफ्तार पकड़ने लगी...

सीमाताई रात के अंधेरे में तेज़ी से कदम बढ़ा रही थी। कुछ समय पहले दृढ़ निश्चय के साथ निकली सीमाताई अब थोड़ी डरी हुई थी।

रात का यह सन्नाटा! सुनसान सड़कें!

अगर आप एक-दो कुत्ते सड़क पर छोड़ देंगे, तो वहां कोई नहीं होगा।

'अगर कुछ बुरा हो जाए तो क्या होगा? हमने रेवती को ऐसे माहौल में अकेला छोड़ दिया? और हम अकेले हैं?'

इस विचार से उसका शरीर कांप उठा।

उन्होंने साड़ी को अपने चारों ओर कसकर लपेट लिया और तेज़ी से चलने लगीं। कुछ देर बाद उन्हें महसूस हुआ कि कोई उनका पीछा कर रहा है। उसने पीछे मुड़कर देखने की हिम्मत नहीं की। वह भगवान का नाम जपते

हुए आगे बढ़ने लगी। कुछ ही क्षणों में एक तिपहिया वाहन उसके पास पहुंचा। उसने पूछा,
" माई ,कहाँ जाना है ?"
सीमा ने कोई जवाब नहीं दिया।
" देखो बहन ,ऐसे रात के वक्त अकेले घुमना खतरे से खाली नाही है ! कहाँ जाना है मुझे बताओ ,मै छोड देता हूँ ! "
" लेकिन मेरे पास अभी पैसे नही है ! ठीक है घर पर दे देना ! "
सीमा ताई के पास कोई विकल्प नहीं था। उसने विरोध नहीं किया! उसका किया सही था या गलत, यह उसे कुछ ही समय में पता चल जाएगा...
कुछ देर बाद माधव की कार चॉल के पास रुकी। केशव राव आगे आए।
"माधव..." माधव तेजी से केशव राव के घर की ओर चल पड़ा।
"केशवा, माँ? क्या माँ सचमुच चली गई...?"
केशवराव के पास कहने के लिए कोई शब्द नहीं थे। उन्होंने माधव को कसकर गले लगा लिया। माधव एक छोटे बच्चे की तरह रोने लगा। उसे अपने आंसुओं पर काबू पाने में कुछ समय लगा।
बाद में वे केशव के घर में दाखिल हुए। जैसे ही उन्होंने शव से कपड़ा हटाया, माधव ने अपनी मां का भयभीत चेहरा देखा।
"माँ..." केशव ने अपने हाथ से अपनी माँ की आँखें बंद कर दीं।
"तुम इतने डरे हुए क्यों हो?" माधव ने पूछा। केशव के पास कोई जवाब नहीं था।
नाडकर्णी ने कहा,
"केशवा... अरे, बताओ! आखिर हुआ क्या था?"
"मुझे क्या पता, चाचा जी? गंगाधर और मैं गुरुजी से मिलने गए थे। गुरुजी और लोहार काफी देर से बाहर गए हुए थे, इसलिए चाचा जी

चिंतित थे। चाची यहाँ अकेली थीं।"
"केशवा, तुम क्या बात कर रहे हो? तुमने तो हमें बताया था कि कुलकर्णी आंटी इसलिए आई थीं क्योंकि उनकी भयानक शक्ल देखकर उनकी जान चली गई थी?"
"मधवा, यहाँ बहुत अफरा-तफरी मची है! मैं तुम्हें बता रही हूँ, मैं उस समय अपने चाचा के साथ महल में थी! तो मैं यहाँ कैसे हो सकती थी? कुछ भयानक हो रहा है! अगर तुम्हें कुछ बताना है, तो एक मिनट रुको!"
उस क्षण, उन्हें एक अत्यावश्यकता का आभास हुआ। सबने उस दिशा में देखा। सीमा ताई आ चुकी थीं। केशव राव की जान खतरे में थी। वह उस दिशा में दौड़ा।
"सीमाएँ? रेवती कहाँ है?"
"बताओ! क्या तुम मुझे कुछ पैसे दे सकते हो?"
केशवराव स्थिति समझ गए। उन्होंने साइकिल सवार को पैसे दे दिए। उन्होंने उसे धन्यवाद दिया और अतिरिक्त पैसे देकर उसे विदा कर दिया। तब तक सीमाताई उनके घर पहुँच चुकी थीं। उन्होंने भी चादर हटाई, काशीबाई का चेहरा देखा और फिर से ढक लिया। उन्होंने काशीबाई को प्रणाम किया। उनकी इस सहजता को देखकर सब आश्चर्यचकित रह गए! वह तुरंत बाहर आ गईं।
"अरे? चाचा कहाँ हैं?" माधव ने यही सवाल पूछा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि पहले कौन बोले, कौन उसे बताए।
"देखो, रेवती ठीक है, उसकी चिंता मत करो! चाचाजी कहाँ हैं?"
केशव ने संक्षेप में सब कुछ समझाया, माधव की जान खतरे में थी! इसका मतलब था कि रेवती सही थी। हमारी गलती क्या थी? क्या हमने उसकी मदद की?
क्या स्नेहल यही कह रही थी? हमने उसे धोखा दिया और यहाँ आ गए।

क्या वह मुसीबत में नहीं है? और अब बाबा को कैसे बचाएँ?
माधव महल की ओर चलने लगा, लेकिन सीमा ने उसे रोक दिया।
"भाई, एक मिनट रुको! मुझे तुम्हें कुछ बताना है!" सीमाताई ने बिना समय बर्बाद किए उसे सारी बात बता दी। क्या उसे उस पर विश्वास करना चाहिए या नहीं? इसमें कोई शक नहीं था!
"चिंता मत करो भाई, चाचा को कुछ नहीं होगा! और अब वो दिन निकल आएगा! अभी तुम्हारा यहाँ होना ज़्यादा ज़रूरी है। चाचा वापस आएंगे! उन पर भरोसा रखो!"
दोनों सीमाताई की बात समझ गए थे। कुछ समय इंतजार करने के अलावा कोई चारा नहीं था। और किसी को उससे मिलने भेजना तो बेवजह मौत को दावत देने जैसा था! भला अगर कुछ गड़बड़ हो गई तो कौन जवाब देगा?... एकमात्र उपाय था चुपचाप बैठे रहना। कम से कम कुछ देर के लिए...
और ऐसा ही हुआ। सूर्य की किरणें यहाँ तेज़ी से चमक रही थीं, और चालकारियों की ओर आते हुए गंगाधरपंत की छवि दिखाई दी।
"डॉक्टर जी, आपके पिताजी आ गए हैं।"
माधव बड़ी प्रसन्नता से उधर देखने लगा। और जैसे ही उसने अपने पिता को देखा, वह दौड़कर उनके पास चला गया। एक ओर तो उसे अपनी माँ के चले जाने का दुख था, और दूसरी ओर अपने पिता को अपने सामने देखकर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा! अंततः, खुशी पर दुख हावी हो गया। और माधव फूट-फूटकर रोने लगा।
“पिताजी... माताजी... माताजी चली गईं!” माधव अपने पिता की बाहों में गिर पड़ा और रोने लगा। उसे दिलासा देते हुए गंगाधर पंत स्वयं व्याकुल हो रहे थे। उसे अभी भी घर का कुछ नहीं पता, प्यार का कुछ नहीं पता, क्या आपको लगता है? वह इसे कैसे सहन करेगा? उसने एक

अलग ही तरह की पवित्रता धारण कर ली।
"माधवा, क्या तुम स्नेहल को नहीं लाए थे?"
"पापा, चलिए मम्मी को घर ले चलते हैं। हमने अभी तक किसी को नहीं बताया है। हम आपका इंतजार कर रहे थे। चलिए अब चलते हैं, मैं एम्बुलेंस का इंतजाम कर देता हूँ।"
माधव ने अपने अस्पताल को फोन किया और एम्बुलेंस मंगवाई। एम्बुलेंस दस मिनट के भीतर आ गई। काशीबाई का शव उसमें रखा गया। सीमाताई और केशवराव एम्बुलेंस में बैठे थे। एम्बुलेंस के पीछे डॉ. माधव और गंगाधर पंत थे। वे अपनी कारों से निकल गए। कोई और विकल्प नहीं था। अगर कुछ हो जाए तो कार पास में होनी चाहिए, है ना?
और केशव राव के पास कार नहीं थी। चॉल में कोई भी ऐसा नहीं था जो ठीक से कार चला सके।
कुछ ही देर में ये तीनों कारें डॉ. माधव के बंगले के सामने पहुँच गईं। माधव ने कार खड़ी की और जल्दी से बाहर निकलकर घंटी बजाई। दरवाजा अभी भी बंद था, तभी गंगाधर पंत भी वहाँ पहुँच गए। उनका मन भय से भर गया। भैरव के शब्द...
दो-तीन बार घंटी बजाने के बाद दरवाजा खुला और उनकी जिंदगी बिखर गई। स्नेहल ने दरवाजा खोला और वापस अपने कमरे में जाकर सो गई। माधव का सिर दर्द से फट रहा था। वह हैरान था। स्नेहल ऐसा व्यवहार कभी नहीं करती। आखिर ये सब क्या है? उसने गंगाधर पंत की ओर देखा। उन्होंने माधव को थपथपाकर शांत किया।
अभी कुछ कहना मूर्खता होगी। सीमाताई और केशवराव उनके पीछे-पीछे आ गए थे। उन्हें घर का माहौल असामान्य लगा। सीमाताई की निगाहें रेवती को ढूंढ रही थीं। रेवती कहीं नजर नहीं आई। कम से कम हॉल में तो नहीं।

"क्या वो कम से कम घर तो आई? हमने उसकी बातों पर भरोसा करके उसे सड़क पर छोड़ दिया था! अगर कुछ हो जाता तो क्या होता?"
"अरे... रेवती दिखाई नहीं दे रही!"
"तो? आपने कहा कि वह ठीक थी?"
"अरे, तुम क्या कर रहे हो? मैंने तुम्हें सब कुछ बता दिया था! मैं घर देख लेता हूँ।"
"एक मिनट रुको, यहाँ क्या हो रहा है, तुम्हें क्या हुआ है?"
सीमाताई को भी रेवती को ढूंढने की प्रेरणा मिली। काशीबाई का शव घर में लाया गया।
रिश्तेदारों को बुलाया गया। फिर, घर की तलाशी लेने के बहाने सीमा ताई ने पूरे घर की छानबीन की। एक कमरे में रेवती ज़मीन पर सो रही थी। उसे देखते ही सीमा ताई का दिल आ गया।
बच्ची को बिना किसी गलती के यह सजा भुगतनी पड़ रही है! इससे निकलने का कोई न कोई रास्ता तो होना ही चाहिए। वे उसे अलग से ले गए और एक कमरे में सुला दिया। फिर जाकर स्नेहल को जगाया।
"स्नेहल, ये क्या है? तुम कैसे सो रही हो? चाची की मृत्यु हो गई! क्या तुम्हें पता नहीं?"
स्नेहल ने उसकी ओर देखकर मुस्कुराया।
"मैं स्नेहल नहीं हूँ! क्या तुम भूल गए कि मैंने कल क्या कहा था? मैंने उसके शरीर पर कब्ज़ा कर लिया है! लेकिन यह बात किसी को पता नहीं चलेगी! क्योंकि मेरी पार्वती की आत्मा उस शिशु में निवास करती है!"
"हमें हमारा किला वापस दे दो! अन्यथा, तुम्हारा परिवार भी उसी तरह नष्ट हो जाएगा जैसे यह परिवार नष्ट हुआ!"
"मैं आपकी शर्त मान लेता हूँ। लेकिन क्या आप मुझे थोड़ा समय देंगे? और भाऊजी को इस बारे में कुछ भी पता नहीं होना चाहिए! वरना वे बच

नहीं पाएंगे!"
कम से कम उनकी जिंदगियों और भावनाओं से तो मत खेलो! इंसानियत दिखाओ! अमानवीय मत बनो! मैं तुम्हारे चरणों में गिरता हूँ। मुझे पंख फैला दो।
"ठीक है। लेकिन ज़्यादा देर तक नहीं!" यह कहते हुए स्नेहल उठी और आँखों में आँसू लिए हॉल में आई। स्नेहल ने माधव को स्नेह भरी नज़रों से देखा। वह उसके पास गई, उसे सांत्वना दी, उसे गले लगाया।
वह उसकी बाहों में गिर पड़ा और काफी देर तक रोता रहा। गंगाधर पंत को इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। उसका साथी दुनिया से विदा हो चुका था। लेकिन उनके मन में एक सवाल था। भैरवनाथ ने कहा था कि दोनों मर गए। तो फिर वह कैसे जीवित है? कोई बात उन्हें परेशान कर रही थी। पर उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि क्या। पर इस समय कुछ कहना भी ठीक नहीं था। उन्हें शर्म और हैरानी दोनों महसूस हो रही थी।
‘क्या हम इस तरह सोचने लगे थे? क्या हमारी आत्मा हमें छोड़कर किसी अजनबी शक्ति के साथ चली गई है? क्या हमें अपनी बहू को जीवित देखकर खुश होना चाहिए था? हमें किस तरह का पछतावा हो रहा है? हमें किस तरह की ईर्ष्या हो रही है?...’
बंगला रिश्तेदारों से खचाखच भरा हुआ था। और अंतिम संस्कार हमेशा की तरह संपन्न हुआ। दिन ढलता चला गया। और रात के भय से सीमाताई सहम गई। कुछ रिश्तेदार रुके रहे। कुछ काम का बहाना बनाकर चले गए। क्या हमारा रुकना सही था या गलत?
सीमाताई दुविधा में थी। अंततः उसने यहीं रुकने का फैसला किया। उसने रेवती की ओर देखा।
'क्या वो अभी भी सो रही है? उसे क्या हुआ? वो रात में कोई शरारत तो नहीं करेगी, है ना?'

उनके विचार एक जैसे थे।
'खतरा आखिर किससे है? उससे, स्नेहल से, या बच्चे से? और अगर आप कहते हैं कि आपको रुकना ही है, तो आपको वास्तव में क्या करना चाहिए? जागते रहना चाहिए? लेकिन कब तक? और जागते हुए आपको क्या करना चाहिए?'
कुछ... जो मुझे समझ नहीं आया। घोर अंधेरा... बस अंधेरा! भविष्य...
➢➢➢➢➢➢

[२१]

काशीबाई की एक बहन आई थी।
दुर्गाबाई! दो बहनें, दो छोर!
काशीबाई मिलनसार थीं। वह लोगों से प्यार से बात करती थीं। उनका व्यवहार स्नेहपूर्ण था!
लेकिन दुर्गाबाई? बिलकुल अद्भुत! वो जो तीखी ज़बान से बोलती हैं, वो जो भेदक निगाहों से देखती हैं, वो जो भय उत्पन्न करती हैं, वो जो एकटक निगाहों से घूरती हैं!
अब वे सीमाताई पर नज़र रखे हुए थे। उन्हें घूर-घूर कर देख रहे थे। उनके आने के बाद से ही वे एक-दूसरे से परिचित हो चुके थे। लेकिन सीमाताई यहाँ रुकने में दिलचस्पी नहीं रखती थी। वहाँ दो-चार और मेहमान भी थे। लेकिन किसी ने उन पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया।
"क्या हुआ, सीमा? क्या बात है?" सीमा उसके शब्दों से चौंक गई।
"उम... कुछ नहीं!"
"अरे, तुम्हें इतना डर क्यों लग रहा है?" दुर्गाबाई की आवाज़ डर और चिंता से भरी हुई थी! इसने सीमा के दिल को छू लिया। सीमा की आँखों में आँसू भर आए।
"चाची, कुछ भी ठीक नहीं है!"

और... सीमाताई उनके पास गई और रोने लगी। "ओह, क्या हुआ, क्या तुम मुझे बताओगे या नहीं?"
सीमाताई ने खुद को संभाला और जल्दी से अपनी आँखें पोंछीं। यह सही समय नहीं है। चार लोग हमें देख रहे हैं!
"आंटी, क्या हम बाद में बात करें? या बाहर जाकर बात करें?"
"देखो, लोगों का खाना रसोई में है। हम दो-चार महिलाएं हैं, तो चलो दो बार खाना खा लेते हैं और फिर उन्हें बताते हैं, ठीक है? हाँ?"
स्नेहल ने महिलाओं से कहा कि वह खाना नहीं खाना चाहती। कोई उसे खाने के लिए ज़ोर नहीं देने वाला था! और सीमाताई भी ज़ोर नहीं देने वाली थी! उसे सच में समझ नहीं आ रहा था कि दुर्गाबाई को क्या कहे? क्या नहीं कहना चाहिए? कहने के बाद भी यह औरत क्या करती? उसे तो यह भी नहीं पता था कि वह कुछ कर भी सकती है या नहीं! वह खुद पर, अपनी जल्दबाजी पर, हर बात में अपनी जल्दबाजी पर गुस्सा थी! लेकिन अब कोई चारा नहीं था!
खाना तैयार हो चुका था, भोजन भी तैयार था। दोनों चुपके से छत पर आ गए। कम से कम सीमाताई को तो यही लगा कि कोई उन पर ध्यान नहीं दे रहा है! लेकिन अनगिनत निगाहें उन्हें देख रही थीं!
"अरे, ज़ोर से बोलो! तुम क्या कह रहे हो?"
सीमाताई धीमी आवाज़ में जितना बोल सकती थी, बोलने लगी! दुर्गाबाई की आवाज़ सुनकर उनका गला सूख गया!
क्या सीमा से पानी मिलता है?
नहीं! मेरा मतलब है, मैं तुम्हें पानी दे दूँगा, लेकिन नीचे आ जाओ, यहाँ अकेले मत रहो!
दुर्गाबाई सीमाताई की बात समझ गई!
दुर्गाबाई चली गई! सीमाताई हैरान रह गई!

"आंटी? आपने कुछ नहीं कहा?"
"किस बारे मेँ?"
"अरे, मैंने तुम्हें इसके बारे में अभी बता दिया!"
दुर्गाबाई इतनी अश्लील हंसी हंसी!
"तुम पागल हो, सीमा! क्या तुम्हारा बेटा थोड़ा डर गया था और तुम लोगों ने उस पर इतना हंगामा मचा दिया! जो कुछ भी हुआ वह महज़ एक संयोग था! क्या तुम्हें पता है असली समस्या क्या है?"
"क्या?"
सीमा को गहरा सदमा लगा।
"तुम्हारी बातों से तो लगता है तुम्हारा घर, तुम्हारी चॉल भी पुरानी होगी! आजकल की लड़कियाँ, तुम्हें तो हर चीज़ एक बैग में चाहिए होती है! लेकिन इसके लिए तो तुम्हें अपने पति की कमाई चाहिए! तुम्हारे मन में भी नए घर, बंगले में रहने की दबी हुई इच्छा होगी, लेकिन तुम अपने पति को सीधे कैसे बता सकती हो? इसलिए तुम उसे इस तरह बेवकूफ बनाना चाहती हो! उसे डराना चाहती हो!"
पति कैसे होते हैं? वे तो बस बैल की तरह होते हैं! पत्नियाँ उन्हें इशारा करती हैं और वे नाचने लगते हैं! अपनी पत्नियों की धुन पर! अब देखो, तुम्हारा इस गाँव में एक घर है और तुम यहीं रह रहे हो! क्यों? क्योंकि तुम्हें इस बंगले से, इस विशाल जगह से, अनजाने में ही प्यार हो गया है!
"आंटी! आप क्या बात कर रही हैं?"
"सीमा, तुम सच कह रही हो! मेरी बहन भक्त थी! मैं नहीं! जब से तुम आई हो, मैं तुम्हें देख रहा हूँ, तुम्हारी नज़रें घर में इधर-उधर घूमती रहती हैं! तुम कुछ ढूंढ रही हो! क्या ढूंढ रही हो? खैर, जब तुम अपने पति हो, तो माधव पर नज़र रख रही हो! उसकी अपनी पत्नी है ना?"
"चाचा जी, बकवास बंद करो!"

"नहीं तो तुम क्या करोगे? क्या तुम मुझे भी मार डालोगे? जैसे तुमने काशी को मारा था?"
"अरे, मुझे उन्हें क्यों मारना चाहिए?"
सीमा को पसीना आ रहा था।
"नहीं तो, उसे किसने मारा? वह पूरी रात तुम्हारे घर पर क्या कर रही थी? तुम अपने बच्चे के साथ यहीं रहते हो, तुम्हें तो चैन से सोना चाहिए था! मेरी बेचारी बहन! वह तुम्हारे कहे पर विश्वास कर बैठी! जो तुमने उसे दिखाया, उसे देखकर वह डर गई!...."
"मौसी, एक मिनट रुकिए! आपको ये सब किसने बताया?"
"अरे, तुम्हारा पति तो सबको यही बात बता रहा था! वह मूर्ख मर गया!"
"चाची, बस करो, चुप रहो!"
"सच कहूँ तो, तुम्हें मिर्च की क्या ज़रूरत है? बताओ! तुम्हारा चावल, तुम्हारी समस्या, फिर तुम मर जाओगे! तुम इस परिवार को क्यों खत्म कर रहे हो? और तुमने क्या कहा? स्नेहल, स्नेहल नहीं है! वह बच्ची, वह बच्ची नहीं है!"
"माधव को ऐसी बात बताने से पहले सावधान रहना! बेचारे को क्या हो गया है? मतलब, अगर तुम उसे ये सब बता दोगे, तो उसने ये सब अपनी मर्जी से किया है, फिर तुम दोनों पति-पत्नी यहाँ मुफ्त में रह सकते हो!"
"चाची, क्या आप पागल हो गई हैं? आप क्या बातें कर रही हैं?"
सीमाताई राडकुंडी आई थी।
"चाची, मैंने आपको सच बताया और आपसे विनती की क्योंकि मेरे भाई और चाचा की जान खतरे में थी! आप कुछ कर सकती हैं!" सीमाताई ने रोते हुए कहा।
"वह कुछ नहीं करेगी... वह कुछ भी करने में सक्षम नहीं होगी!"
जैसे ही अंधेरे से एक आवाज आई, दोनों चौंक गईं और आवाज की दिशा

में देखने लगीं! जैसे ही अंधेरे से एक व्यक्ति आगे आया, दुर्गाबाई की जान खतरे में पड़ गई!
"स्नेहल, आपका स्वागत है! चलो, तुम आ गई! इस छोटी बच्ची को देखो, ये तो तुम्हारा घर हड़पने निकली है! ये कुछ भी बोल रही है!"
"नहीं! वो बिल्कुल यही कह रही है! मैं स्नेहल नहीं हूँ! उसने तुम्हें बताया है कि मैं कौन हूँ! लेकिन तुम मेरी बात नहीं मानते! ठीक है, अभी नहीं, लेकिन मरने के बाद, यह ज़रूर काम करेगा!" सीमाताई हाथ जोड़ने लगीं।
"स्नेहल, मैं तुम्हारे चरणों में गिरता हूँ!"
मैंने तुमसे कहा था कि मैं स्नेहल नहीं हूँ!
"हाँ, हाँ! तुम जो भी हो, उन्हें मत मारो! उनकी कोई गलती नहीं है! उन्होंने जो कुछ भी कहा, इस परिवार के प्रति प्रेम के कारण कहा!"
"सीमा, तुम मूर्ख हो! उसका प्यार कुछ भी नहीं! वह बारह गांवों का पानी पी चुकी है! तुमने गलत व्यक्ति को चुना है, तुम उसकी मदद कर रही हो! तुमने उसे सब कुछ बता दिया, उसे थोड़ा सोच लेना चाहिए था!"
तुम तो उसे जानते भी नहीं! वो अब अपने फायदे के लिए कुछ भी कर सकती है! लेकिन अब ये घर मेरा है। अब ये घर मेरा है! मेरा! और मेरे परिवार के अलावा यहाँ कोई नहीं रहेगा!
"हे सससस!"
सीमाताई और दुर्गाबाई दोनों ही बेहद डरी हुई थीं। दुर्गाबाई तो अपनी जान को लेकर भी चिंतित थीं!
'यह आवाज कौन दे रहा है? माधव! कोई बात नहीं, वह कुछ करेगा! वह तुम्हारी जान बचाएगा!'
लेकिन यह गलत तरीके से हुआ!
उनके सामने जो व्यक्ति प्रकट हुआ, वह उन दोनों में से किसी के लिए भी अपरिचित था!

"क्या हुआ, यशोद?" - आवाज एक पुरुष की थी।
"यह बुढ़िया अपनी चालें चलेगी! इससे आज ही निपटना होगा!"
"चलो चलें! देखते हैं वो क्या करती है? उसे जाने दो! और वैसे भी, हमारे लक्ष्य अलग-अलग हैं! और इन दोनों को सब कैसे पता है? जो भी ये करने वाले थे, वो तो हमने बहुत पहले ही खत्म कर दिया था!"
सीमाताई बुरी तरह कांप रही थी! उसे नहीं पता था कि उसने और किसे मारा है! उसे केशव राव के शब्द याद आ गए! तब तो उसे झटका नहीं लगा था, लेकिन अब!
'हे भगवान! हम यह कैसे भूल गए? क्या हम उन लोगों के पीछे पड़े हैं जिन्होंने गुरुजी की हत्या की? इसका मतलब है कि हम कुछ नहीं कर सकते!'
'हे भगवान! आप इतने निर्दयी कैसे हो सकते हैं? क्या आप एक बार भी हमारे बारे में सोचेंगे? इसका मतलब है कि यह मेरी बेटी की गलती नहीं है और न ही मेरी!'
अगर हम वहां नहीं भी पहुंचते, तो भी वह हम तक पहुंच ही जाता! तो अब हमारा संरक्षक कौन है? या हमारा परिवार भी इसी तरह खत्म हो जाएगा?'
"क्या आप सीमा पर हैं ssss, सीमा ssss?"
केशवराव की आवाज सुनकर सीमाताई चौंक गई और उसे होश आ गया। उसने भविष्य की चिंता किए बिना ही वहां से चली गई!
'अगर हम यहीं रुके रहे तो ये लोग आएंगे और तबाही मचा देंगे! काश, जो हम चाहते हैं वही हो!'
"आंटी, चलिए यहाँ से चलते हैं..."
लेकिन आंटी सुन्न पड़ गई थीं! वह बस सीमाताई को जाते हुए देख रही थीं! उन्हें पूरा यकीन हो गया था कि वह अब जीवित नहीं हैं!

उनके अतीत की यादें उनकी आंखों के सामने कौंधने लगीं... उनके किए गए पाप... यही उनका फल था! उन्हें इसका दंड भुगतना ही था! उनका मन इसके लिए तैयार था!
"डरो मत! मैं तुम्हें इतनी जल्दी मरने नहीं दूँगा! बस हमारी मदद करो! तुम भी हमारी ही जाति के हो! जो काम हम मरने के बाद करते हैं, वह तुमने जीते जी किया है! हमारी मदद करो और जीवन भर सुख से रहो!"
वही पुरुष आवाज गूंजी। दुर्गाबाई का धैर्य बढ़ता गया।
लेकिन इससे मुझे क्या फायदा होगा?
"इसका फायदा? तुम्हें अक्ल आ गई! क्या यह मुझे जिंदा छोड़ने से कम है?"
दुर्गाबाई को एक बात समझ आ गई थी, 'पता नहीं क्यों, वे हमें मारते नहीं हैं या मार नहीं सकते! तो हमें डरने की क्या ज़रूरत है?' उन्होंने एक अलग योजना बनाई...
"ठीक है तो! मुझे मार डालो! मैं इस हालत में कब तक जीऊँगा? मैं दो दिन में मरने वाला हूँ, लेकिन मैं आज ही मर जाऊँगा! मुझे मार डालो!"
"तुम्हें क्या चाहिए?" - वही पुरुष की आवाज।
मैं तुम्हें बताऊँगी, लेकिन मैं तुम्हारे बारे में कुछ नहीं जानती! मुझे नहीं पता कि मैं क्या करना चाहती हूँ, तुम क्या चाहते हो! मुझे पहले से बता दो कि तुमने अब तक क्या किया है, और आगे क्या करने वाले हो!
"तो मैं तुम्हें बताऊँगी कि मुझे क्या चाहिए! और मुझे बताओ कि तुमने किसके साथ क्या किया है!"
"तुम तो बड़े चालाक हो! बिना कुछ किए ही सारी जानकारी निकालने की कोशिश कर रहे हो! ठीक है! लेकिन एक बात याद रखना! मैं तुम्हें हमारे बारे में सारा इतिहास बताऊँगा, लेकिन जब हमारा मकसद पूरा हो जाएगा, तो तुम मर जाओगे, इसमें कोई शक नहीं!"

दुर्गाबाई को गलतफहमी हो गई। उनकी मृत्यु निश्चित है। आज या कल! उन्होंने एक पल में अपना पूरा अतीत देख लिया!

उन्होंने अपने किए हुए पापों को देखा। जाति व्यवस्था क्यों न अपनाई जाए, देखते हैं इससे दो लोगों का भला कैसे हो सकता है! कम से कम मरने के बाद तो मुझे तसल्ली तो रहेगी...

➢➢➢➢➢➢➢

[२२]

गुरुजी एक असाधारण व्यक्तित्व थे! तपस्वी स्वभाव के! संन्यासी होने का आदर्श उदाहरण! उनके भक्त और अनुयायी संख्या में कम थे, लेकिन जो थे वे जीव भाव के करीब थे।

उनमें से एक गंगाधर पंत और उनका परिवार था। अन्य अनुयायियों की तुलना में गंगाधर पंत के प्रति उनका विशेष स्नेह था। और यह एक दिन की बात नहीं थी। यह लगभग तीस साल पहले की बात है। यानी माधव के जन्म से पहले की।

यह आज तक कायम है। गुरुजी की अनेक उपलब्धियाँ थीं। उनका आध्यात्मिक मार्ग उत्तम था। और उनका मन उदार था।

गंगाधर पंत ने उनकी उपस्थिति में ही कुछ सिद्धियाँ सीखी थीं। लेकिन असली कौशल तो सही समय पर उनका उपयोग करने में था। केवल उन्हें आज़माना ही पर्याप्त नहीं था, अन्यथा सिद्धियों के अवांछित परिणाम हो सकते थे।

गंगाधर पंत को अब जीने में कोई रुचि नहीं थी। उनके साथी अनंत में विलीन हो चुके थे। वे कुछ नहीं कर सकते थे। और गुरुजी?

उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि गुरुजी जैसे व्यक्तित्व का अंत हो सकता है। वे इसे पचा नहीं पा रहे थे। गंगाधर पंत को यह बात बिल्कुल भी अच्छी नहीं लग रही थी कि भैरवनाथ जैसी आत्मा गुरुजी का अंत कर

सकती है। फिर गुरुजी कहाँ गए? और यह भैरवनाथ? वह कहता है कि वह उस महल का मालिक है, लेकिन उससे और हमसे क्या दुश्मनी है? यह पता लगाना ज़रूरी था कि असल में क्या हो रहा था। कौन बताएगा?..... उन्होंने बहुत सोचा। और उन्हें जवाब मिल गया! समस्या तो है ही!

लेकिन वह क्यों बताएगा? या तो उसे बताने के लिए राजी करने के लिए, या यह समझने के लिए कि वह वास्तव में क्या चाहता है। और उसे हासिल करने के लिए। लेकिन उस जगह पर तुरंत जाना संभव नहीं था। रिश्तेदार घर आ गए। जैसे-जैसे वे बात करते गए, विचारों का सिलसिला टूटता हुआ सा लगने लगा। खैर, यह बात सबको बताने लायक नहीं थी। लेकिन दुर्गाबाई? हम उनका क्या करें?

वे उसके आने से हैरान थे, लेकिन वे कुछ नहीं कर सकते थे। काशीबाई की करीबी बहन ज़रूर आएगी! एक नंबर की शातिर औरत! उस पर नज़र रखना ज़रूरी है!

उसकी निगाहें सीमाताई पर टिकी थीं। सीमाताई की तीखी निगाहें उसे बेचैन कर रही थीं। वह कुछ खोज रही थी और उसे उससे छुपा रही थी। और स्नेहल? उसका व्यवहार अस्वाभाविक है! और हमारा पोता स्नेहांश? वह भी हमें घूरता रहता है! अब हमें उससे कोई स्नेह नहीं रह गया है। क्या कारण हो सकता है?

उसे भैरवनाथ के शब्द याद आए और उसका मन कांप उठा! उसका हृदय आंसुओं से भर गया! क्या वह जीवित नहीं है? या उसके अस्तित्व पर किसका नियंत्रण है? जीवित होने का अर्थ क्या है? ये शरीर स्नेहल और स्नेहांश के थे।

क्या इसका मतलब यह है कि किसी अज्ञात शक्ति ने उनके आंतरिक स्व पर नियंत्रण कर लिया है?

हाँ, इसकी संभावना ज़्यादा है! और उन्हें अनजाने में ही बेहतर महसूस हुआ। कम से कम वे ज़िंदा तो रहेंगे।
उन्होंने मन बना लिया! चाहे कुछ भी हो जाए, परिवार, हमारा परिवार, हमारी वंश-परंपरा को बचाना ही होगा! भले ही इसका मतलब अपनी जान गंवाना ही क्यों न हो, यही बेहतर है!
वे चल पड़े! वे दृढ़ निश्चय के साथ चल पड़े! फिर उसी महल की ओर... वही महल जहाँ भैरवनाथ मिले थे! गंगाधर पंत को जरा भी अंदाजा नहीं था कि जिस हस्ती की वे तलाश कर रहे थे, वह उनके घर तक पहुँच सकती है!
वे इधर-उधर भटकते रहे, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। अंततः, अनिच्छा से, वे आधी रात को घर लौट आए। उनका ध्यान अनायास ही छत की ओर चला गया।
'ये...? ये दूल्हा क्या कर रहा है? वो भी इस समय?' दूल्हा दुर्गाबाई थी। किसी से बात कर रही थी...
'लेकिन वो कौन होगा? इस उम्र में... किसी से अकेले में बात करना... क्या चल रहा है?'
यह महिला एक पातालयंत्रिणी है, इस पर नज़र रखना ज़रूरी है। इसे नज़रअंदाज़ करने से काम नहीं चलेगा। उसने दरवाज़े की घंटी बजाई। माधव ने दरवाज़ा खोला।
"बाबा... अरे, आप कहाँ चले गए थे? मुझे बस एक सलाह दे दीजिए! हम दोनों क्या खोज रहे हैं?" केशव माधव के पीछे-पीछे गया।
"चुप रहो!" गंगाधर पंत ने उन्हें एक तरफ धकेल कर अंदर प्रवेश किया। सीढ़ियों पर चढ़ते हुए वह पीछे मुड़े और बोले, "माधवा...? दुर्गा के साथ ऊपर कौन है?"
"कौन हो सकता है, बाबा? इस समय? सब सो रहे हैं। हम इसलिए जागे

क्योंकि हमने आपको नहीं देखा।"
"मधवा, बस करो! यह महिला भरोसेमंद नहीं है।"
माधव अपनी चाची के बारे में बहुत कुछ जानता था, और वह एक बहुत बड़ी झूठी थी!
" केशव ,चल ! "
तीनों छत पर पहुँच गए। छत पर अँधेरा था और दुर्गाबाई मुंडेर के पास एक कोने में खड़ी थीं। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था मानो वो किसी से बात कर रही हों। लेकिन उनके सामने कोई नहीं था। तो वो किससे बात कर रही थीं? किसी अवास्तविक से?
"दुर्गे...? क्या हो रहा है...?" गंगाधर पंत ने कड़े स्वर में पूछा।
"ओह, आपकी बहन का आज निधन हो गया, है ना? आपने तुरंत अपना व्यवसाय शुरू कर दिया? आप क्या कर रहे थे?"
दुर्गाबाई पहले तो चौंक गईं, लेकिन फिर शांत भाव से उन तीनों की ओर देखकर बोलीं।
"ठीक है, तुम यहाँ हो। मैं सोच रहा था कि तुम्हें डेट पर कैसे बुलाऊँ? बाकी लोग क्या सोचेंगे?"
"यह मेरे सवाल का जवाब नहीं है! मैंने पूछा था कि आप यहाँ क्या कर रहे हैं!"
दुर्गाबाई ने बहुत ही ठंडे लहजे में कहा,
"पंत? क्या आप भैरवनाथ को जानते हैं?"
गंगाधर पंत हैरान रह गए। और केशव राव भी! माधव को कुछ समझ नहीं आया और उसने पूछा,
" कोण भैरवनाथ ...?"
"माधव, एक मिनट रुको!" गंगाधर पंत ने माधव को बीच में ही रोका और दुर्गाबाई से पूछा,

"उसके साथ आपका क्या रिश्ता है?"
"पैंट, मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगा, लेकिन क्या तुम मुझ पर भरोसा करोगे?"
"मैं तय करूँगा कि इस पर विश्वास करूँ या नहीं! जल्दी से अपनी बात कहो! भैरवनाथ और तुम्हारे बीच क्या संबंध है?"
"माधव, तुम नीचे जाओ। इसमें दखल मत दो।"
दुर्गाबाई ने माधव से प्यार से कहा, "बस अपना ख्याल रखना, अपनी पत्नी और बच्चों से दूर रहना।"
"आंटी, आप क्या बात कर रही हैं?"
"पापा, क्या हुआ? क्या चल रहा है? क्या आप मुझे बता सकते हैं?"
दुर्गाबाई की शांति और हावभाव देखकर गंगाधर पंत का गुस्सा शांत हो गया। वह कुछ ऐसा जानती हैं जो हम नहीं जानते! और जो हमारे परिवार, हमारे घर से जुड़ा है। उन्होंने माधव से शांत स्वर में कहा।
"माधव, तुम्हें यकीन नहीं होगा। लेकिन हालात हद से ज्यादा बिगड़ गए हैं। बात हाथ से निकल गई है। अगर इन्हें अभी सुलझाया नहीं गया, तो हमारा, हमारे परिवार का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। इसलिए बेहतर है कि तुम इसमें दखल न दो। और मैं जो कह रही हूँ वो बिलकुल सच है!"
"पापा, मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था। मुझे आप पर भरोसा है। मैं आपको अकेला नहीं छोड़ूंगी। आप जो भी कहेंगे, वही होगा। लेकिन मैं यहीं रहूंगी!"
समय बर्बाद करने का कोई फायदा नहीं था। केशव राव के पास देखने के अलावा कोई चारा नहीं था।
"दुर्गे, बोलो! तुम किससे बात कर रही थी?"
"पंत, भैरव आये थे!"

"क्या?"
"जी हां, और उनके साथ उनकी पत्नी यशोदा और बेटी पार्वती भी हैं! उन्होंने मुझे धमकी दी है कि मुझे उनकी मदद करनी होगी वरना वे मुझे मार डालेंगे!"
मैंने उसे डांटा भी। तब उसने मदद के बदले अपने परिवार के लिए अपनी जान देने का वादा किया।
लेकिन हमें जीवन कौन देता है?
"पंत, मामला इतना आसान नहीं है जितना तुम सोचते हो। तुमने उसकी संरचना को नष्ट कर दिया है और उसके अस्तित्व पर हमला किया है। इसीलिए उसने स्नेहल और स्नेहांश पर कब्ज़ा कर लिया है!"
"क्या?" माधव चिल्लाया!
"क्या कहा आपने?"
"जी माधव, इस समय तुम्हारी पत्नी और पुत्र यशोदा और पार्वती नामक दो आत्माओं के वश में हैं। हमें सावधान रहना होगा। अन्यथा, दोनों ही खो जाएंगे!"
"लेकिन वे हमारा पीछा क्यों कर रहे हैं?"
"इसकी वजह केशव का परिवार है। तुम दोनों ने गलती की, उनकी मदद करने गए और अपने परिवार को खतरे में डाल दिया। इसीलिए मेरी बहन की मौत हुई! मेरी बात सुनो! अभी सब खत्म नहीं हुआ है। इन तीनों को घर से बाहर निकालो... ये तुम्हारा क्या बिगाड़ेंगे!"
"आंटी सही कह रही हैं। हमारे लिए अपनी जान जोखिम में मत डालो!"
"नहीं, केशवा, उसकी चिंता जायज़ है। लेकिन तुम्हारे बिना यह समस्या हल नहीं होगी। यह खत्म नहीं होगी। हमें इसकी जड़ तक पहुंचना होगा!" गंगाधर पंत ने कहा।
“और इसकी जड़ उसी जगह, उसी तहखाने में है। गुरुजी ने ऐसा कहा

था। हमें वहाँ जाना होगा। भैरव कुछ ऐसा कह रहा था कि गुरुजी और लोहार की मृत्यु वहीं हुई थी। ... दुर्गा ... क्या तुम मुझ पर भरोसा करती हो? ... " गंगाधर पंत ने अचानक पूछा।

"पैंट, तुम क्या पूछ रहे हो? अगर तुम मुझ पर भरोसा नहीं कर सकते, तो मैं किस पर भरोसा करूँ?"

"नहीं, मैंने इसलिए पूछा क्योंकि हमें उस तहखाने में जाना है। हमें भैरव को नष्ट करने के लिए अपनी शक्तियों का उपयोग करना होगा।"

"पंत, तुम सही कह रहे हो। लेकिन तुम्हारे गुरुजी इतनी आसानी से नहीं मरने वाले!"

"आपका क्या मतलब है?" यह सुनकर गंगाधर पंत को सुखद आश्चर्य हुआ।

मुझे लगता है भैरव हमसे कुछ छिपा रहे हैं। या कम से कम गुरुजी तो छिपा ही रहे हैं!

"दुर्गे, क्या तुम्हें समझ आ रहा है कि तुम क्या कह रहे हो?"

"पैंट, घबराओ मत। अगर तुम्हें सुरक्षित बाहर निकलना है, तो सबसे पहले अपना दिमाग शांत रखो। हर बात का अलग-अलग मतलब निकालना बंद करो। हमारी लड़ाई अमानवीय शक्तियों से है। यह नकारात्मक ऊर्जा से है।"

हमें अपनी मानवीय क्षमताओं का उपयोग करके अपनी सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाना होगा। तभी हम जीवित रह पाएंगे। अन्यथा, उनके सामने हमारा जीवित रहना असंभव है!

गंगाधर पंत भी ऐसा ही महसूस कर रहे थे, लेकिन दुर्गा बाई के शब्दों को ठीक से व्यक्त नहीं कर पा रहे थे। और उन्हें इस बात से बहुत अच्छा लग रहा था कि गुरुजी अभी भी जीवित हैं! यह उनके लिए बहुत बड़ा मानसिक सहारा था!

"दुर्गे, तुमने मेरा बड़ा कष्ट दूर कर दिया। ईश्वर तुम्हें मुख से चीनी प्रदान करे। और गुरुजी प्रसन्न रहें।"
"क्योंकि मैं ही उन्हें वहाँ ले गया था। लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि भैरव या उसके परिवार ने काशी की हत्या क्यों की और उसके शरीर पर कब्ज़ा करके उसका इस्तेमाल क्यों किया?"
"अरे बाप रे, वो सीधी-सादी महिला! किसी के भयानक अवतार को देखकर वो जरूर डर गई होगी!" ओह, एक पल के लिए तो मैं डर से कांप उठा।
आम आदमी इस विचार से डरा हुआ है। हमें नहीं पता स्नेहल और स्नेहांश का क्या हुआ। लेकिन कम से कम वे सुरक्षित हैं, हमारे पास कुछ समय है। उस समय को बर्बाद करने का कोई फायदा नहीं है।
"तुम बार-बार कह रहे हो कि तुम जा रहे हो, है ना? तो तुम वहाँ कब जा रहे हो?" "तुम्हारा क्या ख्याल है?"
"पंत, क्या तुम्हें लगता है कि हम उस सुरंग तक आसानी से पहुँच जाएँगे? और अगर पहुँच भी गए, तो क्या हम वापस आ पाएँगे? वापस न आने से कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन अगर समस्या हल नहीं हुई, तो फिर क्या होगा? माधव अकेले क्या करेगा?"
"दुर्गे, इस समय हमारे हाथ में बस यही है कि हम एक पल भी बर्बाद किए बिना अपनी तरफ से हर संभव प्रयास करें। इसी तरह, माधव अकेला नहीं है। केशव और सीमा हमारी मदद के लिए मौजूद हैं।"
"पैंट, उन पर ज्यादा भरोसा मत करो। तुम्हारे परिवार को उन्होंने ही मारा है।"
नहीं, दुर्गा, उसने तो खुद ही सब कुछ बताया। और किले को गिराने का फैसला लोहार का था। इंस्पेक्टर ने उसे मना लिया था। और तुम क्या सोचती हो?

अगर उसने हमें नहीं बताया होता, तो क्या भैरव हम तक नहीं पहुँच जाता? उसने तो बस उसके लिए बहाना बनाया! इस विषय को दोबारा मत उठाना, इसका कोई फायदा नहीं! ठीक है, बच्चों, अपना ख्याल रखना!

एक-दूसरे का साथ दो! हमें नहीं पता कि हम वापस लौटेंगे या नहीं! लेकिन एक-दूसरे को दोष मत दो!

"पिताजी, आप ये क्या कह रहे हैं? ये सब करने की क्या ज़रूरत है? कोई बेहतर तरीका तो होगा ही, है ना? आप अपने जीवन के प्रति इतने उदार कैसे हो सकते हैं?"

गंगाधर पंत ने कुछ नहीं कहा। उन्होंने बस माधव के सिर पर हाथ फेरा और उसकी पीठ थपथपा दी।

हम आ रहे हैं! अपना ख्याल रखना!

और अगर मेहमान सुबह जा रहे हैं, तो उन्हें जाने दो! किसी को मत रोको और न ही कोई चर्चा शुरू करो! भीड़ जितनी कम होगी, खतरा उतना ही कम होगा। हम आ रहे हैं..."

करने के लिए जारी...

➢➢➢➢➢➢➢

***** समाप्त *****

sjeet

लेखक :-योगेश वसंत बोरसे

Publications

ही काल्पनिक कथा मनोरंजन या हेतूने निर्माण केली आहे.

All Rights Reserved at
Yogesh Borse & BGSM